वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 100 मंगलवार 22 सितम्बर 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

ईएमएफ-एसएआरटीटीएसी द्वारा जयपुर में पब्लिक इन्वेस्टमेंट मैनेजमेंट-इंडियन स्टेट्स प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरूआत

देश में सार्वजनिक परियोजनाओं में बड़े स्तर पर निवेश हो रहा: मुख्य सचिव

परियोजनाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन और निवेश से अधिकतम परिणाम सुनिश्चित करना जरूरी

पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में सार्वजनिक निवेश के बेहतर प्रबंधन पर होगा मंथन

जयपुर. शाबाश इंडिया

सार्वजनिक निवेश का बेहतर प्रबंधन, परियोजनाओं का समयबद्ध क्रियान्वयन और निवेश से अधिकतम परिणाम सुनिश्चित करने के उद्देश्य से अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहायता केंद्र (एसएआरटीटीएसी) द्वारा जयपुर में पब्लिक इन्वेस्टमेंट मैनेजमेंटइ इंडियन स्टेट्स विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की सोमवार को शुरूआत हुई। उद्घाटन सत्र में मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने कहा कि देश में सार्वजनिक परियोजनाओं में बड़े स्तर पर निवेश हो रहा है। ऐसे में यह जरूरी है कि परियोजनाएं समय पर पूरी हों और उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग करते हुए निवेश का अधिकतम लाभ आमजन और अर्थव्यवस्था को मिले। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सार्वजनिक निवेश का असर केवल बड़े प्रोजेक्ट्स तक सीमित नहीं रहा है। जल एवं परिवहन जैसी बुनियादी सुविधाओं में लगातार निवेश से दूर-दराज के क्षेत्रों में कनेक्टिविटी बेहतर हुई है और लोगों को बाजारों एवं सार्वजनिक सेवाओं से जोड़ने में मदद मिली है। मुख्य सचिव ने जीएसटी सुधारों को महत्वपूर्ण परिवर्तन बताते हुए कहा कि इससे विभिन्न प्रक्रियाओं और दस्तावेजीकरण को अधिक सुव्यवस्थित करने में मदद मिली है। उन्होंने राज्य के साइबर कोषागार के माध्यम से वित्तीय लेन-देन में पारदर्शिता एवं जवाबदेही बढ़ने तथा एसएनए-स्पर्श के माध्यम से कोषागार आधारित भुगतान व्यवस्था में वास्तविक समय में भुगतान की दिशा में हुए बदलाव का भी उल्लेख किया। इस अवसर पर एसएआरटीटीएसी के निदेशक हेराल्ड फिंगर ने बताया कि एसएआरटीटीएसी अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ), दक्षिण एशिया के सदस्य देशों और विकास साझेदारों की सहयोगात्मक पहल है। इसका उद्देश्य सदस्य देशों की संस्थागत एवं मानव संसाधन क्षमता को मजबूत करना है, ताकि वे बेहतर व्यापक आर्थिक एवं वित्तीय नीतियां तैयार कर उनका प्रभावी क्रियान्वयन कर सकें। उन्होंने बताया कि एसएआरटीटीएसी में भारत के साथ बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, नेपाल और श्रीलंका सदस्य देश हैं। यह आईएमएफ का ऐसा क्षेत्रीय केंद्र है, जहां प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता दोनों को एक साथ उपलब्ध कराया जाता है। इस अवसर पर एसएआरटीटीएसी के रेजिडेंट पब्लिक फाइनेंशियल मैनेजमेंट एडवाइजर श्री स्टीफन टर्नबुल, नीति आयोग के वरिष्ठ सलाहकार श्री अनुराग गोयल, विशेष शासन सचिव वित्त (बजट) शिवांगी स्वर्णकार तथा आईएमएफ के वित्तीय मामलों के विभाग के विशेषज्ञ रूई मोंटेइरो एवं मार्टिन डार्सी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

9 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव धरातल पर

मुख्य सचिव ने कहा कि राइजिंग राजस्थान के तहत लगभग 35 लाख करोड़ रुपये के निवेश समझौते हुए हैं, जिनमें से करीब 9 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव धरातल पर उतर चुके हैं। उन्होंने कहा कि राजस्थान देश के प्रमुख नवीकरणीय ऊर्जा केंद्रों में तेजी से उभर रहा है। राइजिंग राजस्थान के तहत भी इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। उन्होंने भड़ला सौर पार्क का उल्लेख करते हुए कहा कि ऐसी परियोजनाएं बताती हैं कि सही दिशा में किया गया रणनीतिक निवेश आर्थिक विकास को गति देने के साथ ऊर्जा सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

मुख्य सचिव से आईएमएफ-एसएआरटीटीएसी के निदेशक हेराल्ड फिंगर ने की शिष्टाचार भेंट

मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास से सोमवार को दक्षिण एशिया क्षेत्रीय प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहायता केंद्र के निदेशक हेराल्ड फिंगर ने शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान दोनों के बीच सार्वजनिक निवेश प्रबंधन, निवेश की दक्षता बढ़ाने तथा राज्य में सार्वजनिक निवेश से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। बैठक में जीएसटी सुधारों, एसएनए-स्पर्श व्यवस्था तथा राज्य कोषागार के डिजिटलीकरण से संबंधित विषयों पर भी विचार-विमर्श किया गया। चर्चा के दौरान सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन को अधिक प्रभावी, पारदर्शी एवं तकनीक आधारित बनाने तथा सार्वजनिक निवेश की योजना एवं क्रियान्वयन में दक्षता बढ़ाने पर भी विचार साझा किए गए। इस अवसर पर विशेष शासन सचिव, वित्त शिवांगी स्वर्णकार एवं एसएआरटीटीएसी के रेजिडेंट पब्लिक फाइनेंशियल मैनेजमेंट एडवाइजर स्टीफन टर्नबुल भी उपस्थित रहे।

उत्तम सत्य धर्म : मधुर वचन ही सच्चा धन है...

जयपुर. शाबाश इंडिया। दशलक्षण महापर्व के पांचवें दिन आज देशभर में जैन समाज द्वारा उत्तम सत्य धर्म अत्यंत भक्तिभाव के साथ मनाया जा रहा है। जिनालयों में सुबह से ही देव-शास्त्र-गुरु की विशेष पूजा-अर्चना, अभिषेक एवं शांतिधारा का दौर जारी है। श्रद्धालु उत्तम सत्य धर्म की आराधना करते हुए अपने जीवन से असत्य, अहंकार एवं कटु वचनों के त्याग का संकल्प ले रहे हैं। जैन दर्शन के अनुसार केवल सच बोलना ही सत्य नहीं है, बल्कि वह वचन जो प्राणिमात्र के हित में हो, मधुर हो और अहिंसा से युक्त हो, वही वास्तविक सत्य है। मनुष्य को सदैव दूसरों का भला करने वाले और मधुर वचन बोलने चाहिए। किसी की पीठ पीछे निंदा या बुराई नहीं करनी चाहिए।

कहा भी है...

''कठिन वचन मति बोल, परनिंदा अरु झूठ तज,
सच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी।''

यदि कहीं ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो, जहां कड़वे वचन बोलने से किसी को कष्ट या संताप पहुंचता हो, तो ऐसी स्थिति में मौन रह जाना ही उत्तम सत्य धर्म को दृढ़ करता है। उत्तम सत्य धर्म हमें सिखाता है कि हमारे मन, वचन और काय में पूर्ण एकरूपता होनी चाहिए। अर्थात हमारे भीतर जो भाव हों, वही हमारे वचनों और आचरण में भी प्रकट होने चाहिए। सत्य केवल शब्दों तक सीमित नहीं है, बल्कि सत्यपूर्ण विचार, मधुर वाणी और सदाचरण ही उत्तम सत्य धर्म की वास्तविक पहचान हैं।

उत्तम संयम धर्म की पूजा कर अर्घ्य समर्पित किए

श्रीजी की माला पहनने का सौभाग्य मोनू-प्रीति जैन को मिला

टोंक. शाबाश इंडिया। सोमवार को जिले के सभी जिनालयों में उत्तम संयम धर्म की पूजा की गई। हर्षोल्लास और धूमधाम के साथ सुगंध दशमी पर्व मनाया गया तथा जिनालयों में धूप का क्षेपण किया गया। प्रवक्ता राजेश अरिहंत ने बताया कि श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर पुरानी टोंक में प्रातः क्षीर सागर से जल लाकर भगवान पार्श्वनाथ, भगवान महावीर स्वामी एवं भगवान आदिनाथ स्वामी का महामस्तकाभिषेक किया गया। पुण्यार्जक परिवारों के नाम-वचन के साथ वृहद शांतिधारा की गई। शांतिधारा से प्राप्त गंधोदक श्रद्धालुओं ने मस्तक पर लगाकर भगवान का आशीर्वाद प्राप्त किया। उत्तम संयम धर्म की पूजा के तहत श्रद्धालुओं ने भगवान को अष्टद्रव्य एवं श्रीफल समर्पित किए। इस अवसर पर अंजलि, रीना, रेखा, निशा, सुनीता, सारिका, बीना, आशा, अनीता, प्रियंका, सीमा, अनीता आदि मौजूद थीं। निर्मल सोगानी ने बताया कि धर्मसभा को संबोधित करते हुए पंडित अनिकेत जैन शास्त्री ने कहा कि उत्तम संयम धर्म जैन धर्म के दशलक्षण महापर्व का छठा महत्वपूर्ण अंग है। इसका अर्थ मन, वचन और काया पर नियंत्रण रखते हुए जीवों की रक्षा करना है। संयम का अर्थ सभी प्रकार से इंद्रियों और कषायों पर नियंत्रण रखना है। मानव बिना संयम के बिना ब्रेक की गाड़ी के समान है। संयम केवल इच्छाओं को रोकना नहीं, बल्कि जागरूकता के साथ जीवन को धर्म के मार्ग पर चलाना है। पांचों इंद्रियों तथा मन के विषयों में आसक्ति को घटाना, जीवों की रक्षा करना और किसी भी जीव को नहीं सताना ही संयम धर्म है। संयम धारण करने वाला व्यक्ति इस लोक और परलोक में आदरणीय बनता है तथा पापकर्मों से मुक्त रहता है। दिनेश जैन ने बताया कि सायंकाल पांचों जैन मंदिरों–पुरानी टोंक, नसियां एवं चेतालय–में सुगंध दशमी पर्व मनाया गया। पांच मंदिर पुरानी टोंक में सुगंध दशमी पर्व के अवसर पर श्रद्धालुओं ने सायंकाल मंदिरों में जाकर धूपाड़े में धूप का क्षेपण किया। श्रद्धालुओं ने अपने कर्मों के नाश की प्रार्थना करते हुए विश्व में शांति की कामना की। महिलाओं एवं छोटे बच्चों ने बड़ों के पैर छूकर आशीर्वाद लिया। पांचों मंदिरों को खूबसूरत डेकोरेशन से सजाया गया तथा जगमगाती लाइटों से परिसर को रोशन किया गया। धूप के क्षेपण से संपूर्ण पांच मंदिर परिसर सुगंधमय हो गया और अलौकिक वातावरण बन गया। महिलाओं ने मंदिर में मंगल विनतियां गाईं। पदम गोधा ने बताया कि इससे पूर्व रविवार सायंकाल पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर पुरानी टोंक में भगवान पार्श्वनाथ का वार्षिक कलशाभिषेक समारोह हुआ। इसके तहत रजत जड़ित समोशरण में भगवान को विराजमान कर जलाभिषेक किया गया तथा भक्तिभाव के साथ अभिषेक संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्रीजी के चरणों में रखी गई माला को पहनने का सौभाग्य स्वर्गीय श्री महेश चंद चौधरी के परिवार की विमला देवी, मोनू-प्रीति एवं अंकुर-एकता जैन चौधरी परिवार को मिला। चौधरी परिवार ने श्रीजी की माला पहनकर भगवान से आशीर्वाद लिया।

उत्तम संयम धर्म का संदेश: इन्द्रियों पर नियंत्रण ही सच्चे संयम की पहचान

सुगंध दशमी पर मंदिरों में हुआ धूप क्षेपण, धार्मिक आयोजनों में उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

मदनगंज-किशनगढ़. शाबाश इंडिया

दशलक्षण महापर्व के छठे दिन सोमवार को उत्तम संयम धर्म के अवसर पर रूपनगढ़ रोड स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन मंदिर में मूलनायक भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ का अभिषेक एवं शांतिधारा की गई। इस अवसर पर मंदिर में दिनभर विभिन्न धार्मिक आयोजन हुए। सुगंध दशमी पर्व भी श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। सुगंध दशमी के पावन अवसर पर प्रातःकाल श्रीजी का पंचामृत अभिषेक, शांतिधारा एवं पूजन तथा सायंकाल महाआरती का सौभाग्य राजकुमार, जयकुमार, निर्मल, प्रदीप, राहुल, अनुज, ऋषभ, अर्पित, अमन, मनन, विहान, नवांश, अभयम दोषी परिवार (हरसोली वाले) परिवार को प्राप्त हुआ। श्रीजी के अभिषेक एवं शांतिधारा के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। सुगंध दशमी के अवसर पर मंदिरों में श्रद्धालुओं द्वारा विधि-विधानपूर्वक धूप क्षेपण किया गया। मंदिर में आयोजित दशलक्षण मंडल विधान कर्ता परिवार एवं सौधर्म इंद्र श्रावक श्रेष्ठी विमलकुमार-विनीता, महेंद्रकुमार-कल्पना, कनिका, समर्थ पाटनी परिवार (उरसेवा वाले) के साथ विजय कासलीवाल, महावीरप्रसाद पाटनी (फुलेरा), विजय झाँझरी जिनेन्द्र बोहरा, पवन दोषी, सुरेश बगड़ा महिलाओ मे इंदु सोनी, मंजू पाटनी, रिंकी गंगवाल, रिटा गंगवाल, आभा पाटनी, मधु जैन, शरबती पापड़ीवाल, प्रभा बैद, शकुंतला कासलीवाल सहित 100 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने विधान में सहभागिता करते हुए भगवान का गुणगान किया। इस दौरान पंच परमेष्ठी पूजन, चौबीसी पूजन, पंचमेरु पूजन, सोलह कारण पूजन, दशलक्षण पूजन एवं सुगंध दशमी पूजन सहित भगवान आदिनाथ, भगवान अनन्तनाथ भगवान विमलनाथ भगवान एवं भगवान महावीर की अष्टद्रव्य से पूजा-अर्चना की गई। प्रचार-प्रसार संयोजक जितेन्द्र पाटनी ने बताया कि सायंकाल श्री दिगंबर जैन वीर संगीत मंडल द्वारा सुमधुर भजनों एवं भक्तिमय धुनों के साथ संगीतमय महाआरती का आयोजन किया गया। महाआरती में भगवान मुनिसुव्रतनाथ, भगवान महावीर, भगवान पार्श्वनाथ, आचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज, पद्मावती माता एवं क्षेत्रपाल बाबा की आरती की गई। महाआरती के पश्चात विनोद पाटनी (उरसेवा) ने उत्तम संयम धर्म के महत्व पर भावपूर्ण प्रवचन दिए। उन्होंने कहा कि संयम का अर्थ केवल बाहरी नियमों का पालन करना नहीं, बल्कि मन, वचन और काया के साथ-साथ इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना है। मनुष्य को क्रोध, मान, माया और लोभ जैसे विकारों से दूर रहकर आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए। धर्मसभा में बताया गया कि जैन धर्म में संयम का विशेष महत्व है। संयमित जीवन व्यक्ति को विषय-वासनाओं से दूर करता है और आत्मा की शुद्धि की ओर ले जाता है। प्रत्येक जीव के प्रति अहिंसा, करुणा एवं मैत्री का भाव रखना भी संयम का महत्वपूर्ण अंग है। कार्यक्रम के दौरान श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव के साथ विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लिया। मंदिर एवं आयोजन स्थल पर दिनभर धर्ममय वातावरण बना रहा। उत्तम संयम धर्म का संदेश यही है कि अपनी इच्छाओं एवं इन्द्रियों पर नियंत्रण रखते हुए अहिंसा, आत्मानुशासन और सदाचार को जीवन में अपनाना ही सच्चे संयम की पहचान है।

उत्तम संयम धर्म का संदेश: संयम धारण कर जीवन को सार्थक बनाने का आह्वान

मदनगंज-किशनगढ़. शाबाश इंडिया

दशलक्षण महापर्व के छठे दिन सोमवार को सुगंध दशमी के अवसर पर उत्तम संयम धर्म की आराधना की गई। आर.के. कम्युनिटी सेंटर में आयोजित दशलक्षण मंडल विधान में देवाधिदेव 1008 श्री शांतिनाथ भगवान के अभिषेक, शांतिधारा एवं महाआरती का सौभाग्य सौधर्म इंद्र परिवार को प्राप्त हुआ। सौधर्म इंद्र बनने का सौभाग्य श्रीमती विमलादेवी, अशोककुमार, मनोजकुमार, रवि एवं ऋषभ दोषी परिवार को प्राप्त हुआ। सौधर्म इंद्र परिवार ने आचार्य 108 श्री विहर्षसागर जी महाराज के पाद प्रक्षालन, शास्त्र भेंट एवं सायंकालीन महाआरती का सौभाग्य प्राप्त किया। इस अवसर पर आचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज, आचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज एवं आचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी महाराज के चित्रों का अनावरण भी सौधर्म इंद्र परिवार द्वारा किया गया। आर.के. कम्युनिटी सेंटर स्थित अस्थायी चैत्यालय में विराजित श्री आदिनाथ भगवान, श्री पार्श्वनाथ भगवान एवं श्री महावीर भगवान के अभिषेक एवं शांतिधारा का सौभाग्य रमेशचंद जैन, मुंबई, चांदमल, प्रकाशचंद, कैलाशचंद, नवीन एवं राकेश गंगवाल परिवार (कुली) तथा श्रीमती तारादेवी पाटनी (भड़स्या वाले) को प्राप्त हुआ। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य 108 श्री विहर्षसागर जी महाराज ने उत्तम संयम धर्म की व्याख्या करते हुए कहा कि साधु का उद्देश्य केवल आहार प्राप्त करना नहीं, बल्कि संयम की रक्षा करते हुए समाधि की ओर बढ़ना है। उन्होंने कहा कि आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज को जब समाधि का समय निकट अनुभव हुआ तो उन्होंने उपवास प्रारंभ किए। उन्होंने 32 उपवास किए, लेकिन जब समाधि नहीं हुई, तब भी संयम की साधना को सर्वोपरि रखा। आचार्य श्री ने कहा कि जीवन में संयम धारण करना आवश्यक है। जीवन में ऐसे कार्य करने चाहिए कि व्यक्ति के जाने के बाद भी लोग उसे याद करें। उन्होंने बताया कि पूर्व समय में मुनिराज 7 दिन में एक बार आहार ग्रहण करते थे और पड़गाहन में जिस वस्तु का उल्लेख होता था, उसी के अनुसार आहार लेते थे। यही संयम की साधना थी। उन्होंने कहा कि संयम केवल साधु जीवन तक सीमित नहीं है। गृहस्थ भी अपने जीवन में संयम धारण कर सकता है। संयम के अनेक रूप हैं, जिनमें वाणी का संयम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। दीक्षा का अर्थ केवल वस्त्रों का त्याग करना नहीं, बल्कि 28 मूल गुणों को धारण करना, 32 अंतरायों से बचना और इंद्रियों पर नियंत्रण रखना है। आचार्य श्री ने कहा कि जब हम किसी वस्तु को अपना मान लेते हैं तो धीरे-धीरे उसी के गुलाम बन जाते हैं। इसलिए केवल गुणों की प्रशंसा करने के बजाय उन्हें अपने जीवन में उतारना चाहिए। उन्होंने कहा कि मनुष्य का जीवन क्रोध, मान और माया जैसी प्रवृत्तियों से प्रभावित होता है। इनसे ऊपर उठकर मैत्री भाव को अपनाना चाहिए और जगत के सभी जीवों के प्रति मित्रता का भाव रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य भगवान बनना है, लेकिन वर्तमान में अधिकांश लोग उस मार्ग की पहली सीढ़ी पर ही खड़े हैं। इसलिए संयम, सदाचार और आत्मानुशासन के माध्यम से निरंतर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में हुआ जैन तीर्थ दर्शन

आर.के. कम्युनिटी सेंटर में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्री दिगंबर जैन वीर संगीत मंडल द्वारा ''जैन तीर्थ दर्शन'' कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में जैन तीर्थों की धार्मिक एवं सांस्कृतिक झलक प्रस्तुत की गई, जिसका उपस्थित श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक लाभ लिया। कार्यक्रम का संचालन बसंत बैद ने किया।

राजनीति

अश्लील या मिठास?

डॉ. सत्यवान सौरभ

''चंदा मामा दूर के, पुए पकाएं बूर के'' बचपन की दुनिया में शायद ही कोई ऐसी लोरी हो, जिससे भारतीय पीढ़ियों की इतनी गहरी स्मृति जुड़ी हो। माँ की गोद, नींद से बोझिल आँखें, चाँद को मामा मानने की कल्पना और मीठे पुओं की तस्वीर इन सबको समेटे यह पंक्ति केवल गीत नहीं, बल्कि भारतीय लोकजीवन की सांस्कृतिक स्मृति है। ऐसे में 'बूर' शब्द के अर्थ को लेकर उठा विवाद केवल एक शब्द की बहस नहीं, बल्कि यह सोचने का अवसर है कि भाषा को हम शब्दकोश की संकीर्ण परिभाषा से देखते हैं या उसके ऐतिहासिक, क्षेत्रीय और सांस्कृतिक संदर्भ से। भारत की भाषायी विविधता में एक ही शब्द अलग-अलग प्रदेशों में अलग अर्थ रख सकता है। उच्चारण, बोली और समय के साथ शब्दों के अर्थ बदलते हैं। 'बूर' या 'बूरा' उत्तर भारत की कई बोलियों में चीनी के महीन चूर्ण या तगार के अर्थ में लंबे समय से प्रयुक्त होता रहा है। पुए, लड्डू और अन्य पारंपरिक मिठाइयों के संदर्भ में इसका प्रयोग सहज है। इसलिए यदि किसी दूसरे क्षेत्र में इसी ध्वनि वाले शब्द का कोई आपत्तिजनक अर्थ प्रचलित है, तो उस अर्थ को पूरी लोरी पर आरोपित करना भाषायी संदर्भ के साथ न्याय नहीं होगा। लोकगीतों और लोरियों का संसार लिखित शब्दकोशों से कहीं पुराना है। वे पीढ़ियों की जुबान से आगे बढ़ते हैं और उनके शब्दों का अर्थ उस लोकसमाज की संस्कृति में निहित होता है, जहाँ वे जन्म लेते हैं। ''चंदा मामा दूर के'' भी इसी लोकपरंपरा से जुड़ी लोरी है, जिसे १९५५ की हिंदी फिल्म 'वचन' के माध्यम से व्यापक लोकप्रियता मिली। लोकधुन और लोकभावना ने सिनेमा के रास्ते करोड़ों लोगों की स्मृति में स्थायी स्थान बनाया। भाषा का इतिहास बताता है कि शब्द स्थिर नहीं होते। वे यात्राएँ करते हैं, भाषाएँ बदलती हैं और उनके साथ अर्थ भी बदलते हैं। आधुनिक भारतीय भाषाओं तक तथा अरबी, फारसी, तुर्की और अंग्रेजी जैसी भाषाओं से आए अनेक शब्द आज भारतीय भाषाओं का स्वाभाविक हिस्सा हैं। किसी शब्द की व्युत्पत्ति जान लेना और उसके वर्तमान अर्थ को उसी मूल अर्थ के बराबर मान लेना दो अलग बातें हैं। 'औरत' शब्द इसका उदाहरण है। इसकी अरबी शब्द-परंपरा में 'अवरा' से जुड़े अर्थों का संबंध ढकने या छिपाने योग्य चीजों से रहा है, लेकिन भारतीय भाषाओं में 'औरत' का सामान्य अर्थ महिला या स्त्री के रूप में स्थापित हो गया।

संपादकीय

युद्ध की आग का बढ़ता दायरा

मास्को और उसके आसपास 20 सितंबर को हुए बड़े ड्रोन हमलों ने रूस-यूक्रेन युद्ध के फैलते दायरे को सामने ला दिया है। रूसी अधिकारियों के अनुसार, हमलों की इस लहर में तीन लोगों की मौत हुई और राजधानी क्षेत्र में आवासीय तथा ऊर्जा ढांचे को नुकसान पहुंचा। मास्को की प्रमुख तेल रिफाइनरी के एक हिस्से को भी नुकसान पहुंचने की सूचना है। रूस के अधिकारियों ने दावा किया कि शनिवार से देशभर में 1,600 से अधिक ड्रोन को रोका गया, जिनमें करीब 450 मास्को की दिशा में बढ़ रहे थे। मास्को के मेयर सर्गेई सोबयानिन ने इसे अभूतपूर्व हमला बताया। इन आंकड़ों और दावों की स्वतंत्र पुष्टि सीमित है। यह हमला रूस के संसदीय चुनाव के अंतिम दिन हुआ। सोबयानिन ने आरोप लगाया कि हमले का उद्देश्य मतदान प्रक्रिया को बाधित करना था। दूसरी ओर, यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा कि लंबी दूरी के हमलों का असर रूस के तेल और लॉजिस्टिक ढांचे पर पड़ा है। दोनों पक्षों के बयानों को अलग-अलग देखते हुए इतना स्पष्ट है कि युद्ध अब लंबी दूरी के ड्रोन और मिसाइल हमलों के नए चरण में पहुंच चुका है। हमले का मानवीय पहलू सबसे गंभीर है। मॉस्को क्षेत्र में एक ड्रोन के आवासीय इमारत से टकराने के बाद करीब 400 लोगों को सुरक्षित स्थान पर ले जाना पड़ा। दूसरी ओर, उसी अवधि में यूक्रेन के कीव क्षेत्र में रूसी हमलों में एक महिला और उसके दो छोटे बच्चों सहित कई लोगों के मारे जाने की खबर आई। खेरसॉन क्षेत्र में भी नागरिकों के हताहत होने की सूचना मिली। इससे स्पष्ट होता है कि जवाबी हमलों का असर सैन्य ठिकानों से आगे बढ़कर आम नागरिकों के जीवन तक पहुंच रहा है। ऊर्जा ढांचा इस संघर्ष का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य बनता जा रहा है। तेल रिफाइनरियां और अन्य ऊर्जा प्रतिष्ठान सैन्य या औद्योगिक परिसंपत्तियां ही नहीं हैं; वे ईंधन आपूर्ति, परिवहन और स्थानीय अर्थव्यवस्था से भी जुड़े होते हैं। मॉस्को की रिफाइनरी पर हमले से उत्पादन या आपूर्ति प्रभावित होती है, तो उसका असर स्थानीय स्तर पर ईंधन की उपलब्धता और कीमतों पर पड़ सकता है। लंबे समय तक ऐसे हमले जारी रहने पर क्षेत्रीय ऊर्जा बाजारों पर भी दबाव बढ़ सकता है। ड्रोन युद्ध की बदलती प्रकृति का भी संकेत दे रहे हैं। अपेक्षाकृत कम लागत वाले लंबी दूरी के ड्रोन अब हजारों किलोमीटर दूर स्थित महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों को निशाना बनाने की क्षमता रखते हैं। इसके कारण पारंपरिक युद्धक्षेत्र और घरेलू क्षेत्र के बीच की दूरी कम होती जा रही है। हवाई सुरक्षा प्रणालियों पर भी लगातार दबाव बढ़ रहा है। मास्को के धमाके इसलिए केवल एक शहर में हुई सैन्य कार्रवाई के रूप में नहीं देखे जा सकते। वे उस व्यापक संकट की ओर संकेत करते हैं जिसमें दोनों पक्ष एक-दूसरे की सैन्य, ऊर्जा और लॉजिस्टिक क्षमता को कमजोर करने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे माहौल में सबसे बड़ी चिंता नागरिक सुरक्षा और संघर्ष के और व्यापक होने की है। युद्ध में सैन्य उपलब्धियों के दावों के बीच आम नागरिकों की सुरक्षा को केंद्र में रखना जरूरी है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

डेंगू के खिलाफ लड़ाई में नई उम्मीद

कांतिलाल मांडोत

डेंगू के खिलाफ भारत की लड़ाई में वैक्सीन की उपलब्धता की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। जापान की टेकेडा फार्मास्युटिकल्स की क्यूडेंगा वैक्सीन को दुनिया के कई देशों में स्वीकृति मिल चुकी है और इसके भारत में उपलब्ध होने की दिशा में भी प्रयास जारी हैं। हालांकि, सितंबर 2026 तक भारत में क्यूडेंगा को नियामकीय मंजूरी मिलने की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। इसलिए इसे भारत में स्वीकृत पहली डेंगू वैक्सीन कहना अभी उचित नहीं होगा। डेंगू देश के लिए लंबे समय से एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती बना हुआ है। मानसून के दौरान पानी जमा होने से मच्छरों के प्रजनन की स्थिति बनती है और संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। बड़े शहरों से लेकर कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों तक इसके मामले सामने आते हैं। तेज बुखार, सिरदर्द, शरीर में दर्द और कमजोरी जैसे लक्षण कई बार सामान्य वायरल बुखार जैसे दिखाई देते हैं, जबकि गंभीर स्थिति में अस्पताल में भर्ती की आवश्यकता पड़ सकती है। क्यूडेंगा टेकेडा द्वारा विकसित चार-प्रकार वाले डेंगू वायरस के खिलाफ बनाई गई जीवित, कमजोर किए गए वायरस पर आधारित वैक्सीन है। इसे 2022 में इंडोनेशिया में पहली बार मंजूरी मिली थी। इसके बाद यूरोपीय संघ सहित कई देशों में इसे स्वीकृति मिली। मार्च 2026 में मेक्सिको भी उन देशों में शामिल हुआ, जहां क्यूडेंगा को मंजूरी दी गई। वैक्सीन की उपलब्धता बढ़ाने के लिए टेकेडा ने भारत की बायोलॉजिकल ई. लिमिटेड के साथ साझेदारी की है। इस सहयोग का उद्देश्य उत्पादन क्षमता बढ़ाना और भविष्य में डेंगू प्रभावित देशों तक वैक्सीन की पहुंच आसान बनाना है। बायोलॉजिकल ई. सालाना पांच करोड़ तक खुराक के उत्पादन की क्षमता विकसित करने की दिशा में काम कर रही है। क्यूडेंगा पर हुए लंबे समय के अध्ययन में भी महत्वपूर्ण आंकड़े सामने आए हैं। टेकेडा के अनुसार सात वर्ष तक किए गए फेज-३ अध्ययन में वैक्सीन ने डेंगू संक्रमण और डेंगू के कारण अस्पताल में भर्ती होने से बचाव में प्रभाव दिखाया। कंपनी ने बताया कि अध्ययन में कोई नया सुरक्षा संकेत सामने नहीं आया। इन आंकड़ों का स्वतंत्र नियामकीय मूल्यांकन और अलग-अलग देशों में स्वीकृत उपयोग के निर्देश महत्वपूर्ण रहेंगे। भारत जैसे विशाल और घनी आबादी वाले देश में डेंगू की रोकथाम के लिए केवल वैक्सीन पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं होगा। घरों और आसपास पानी जमा नहीं होने देना, मच्छरों के प्रजनन स्थलों को समाप्त करना, साफ-सफाई बनाए रखना और बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर समय पर चिकित्सकीय सलाह लेना जरूरी है। वैक्सीन उपलब्ध होने के बाद लोगों तक सही जानकारी पहुंचाना भी महत्वपूर्ण होगा। किन आयु वर्गों के लिए इसका उपयोग होगा, कितनी खुराक दी जाएंगी, किन लोगों को चिकित्सकीय सलाह की आवश्यकता होगी और इसकी कीमत क्या होगी—इन सभी विषयों पर भारत के नियामक और स्वास्थ्य संस्थानों की आधिकारिक जानकारी का इंतजार करना होगा। डेंगू वैक्सीन पर हो रही प्रगति चिकित्सा विज्ञान के लिए महत्वपूर्ण कदम है। भारत में इसके नियामकीय मूल्यांकन और भविष्य की उपलब्धता से डेंगू की रोकथाम के विकल्पों का विस्तार हो सकता है। हालांकि प्रभावी नियंत्रण के लिए टीकाकरण के साथ स्वच्छता, मच्छर नियंत्रण, जागरूकता और समय पर उपचार को भी समान महत्व देना होगा। वैज्ञानिक अनुसंधान और सामूहिक जनभागीदारी के माध्यम से डेंगू के प्रभाव को कम करने की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

उत्तम तप धर्म: जीवन को कुंदन बनाने की कला

डॉ. अल्पना जैन "महाराष्ट्र गौरव"

जिन धर्म रक्षिका एवं समाजसेविका, मालेगांव

''उत्तम तप धर्म'' जैन दर्शन के दशलक्षण महापर्व का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। तप का सरल अर्थ है—अपने भीतर की अशुद्धियों को दूर करने के लिए स्वयं की साधना। जिस प्रकार सोने को अग्नि में तपाने पर उसका सारा कचरा नष्ट हो जाता है और वह कुंदन बन जाता है, ठीक उसी प्रकार तप के द्वारा आत्मा पर चढ़े कर्मरूपी मैल का क्षय होता है और शुद्ध आत्मस्वरूप प्रकट होता है। आत्मा की शुद्धि के मार्ग में 'तप' शब्द सुनते या पढ़ते ही अक्सर हमारे मन में घर-बार छोड़कर जंगल जाने, भूखे रहने या कांटों पर सोने जैसी तस्वीरें उभरती हैं। लेकिन जैन दर्शन में 'उत्तम तप' का अर्थ केवल शरीर को कष्ट देना नहीं है, बल्कि अपनी इच्छाओं पर विजय प्राप्त करना है। जब हम अपनी इच्छाओं और इंद्रियों को वश में करके आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ते हैं, तो वही सच्चा तप कहलाता है। 'उत्तम' शब्द दर्शाता है कि यह तप नाम, प्रसिद्धि या किसी सांसारिक लालसा के लिए नहीं, बल्कि आत्मा की मुक्ति और वीतराग भाव की प्राप्ति के लिए किया जाता है। सच्चा तप हमारे भीतर की नकारात्मकता जैसे क्रोध, मान, माया और लोभ को जलाकर भस्म करने का माध्यम बनता है। आध्यात्मिक यात्रा में तप को दो मुख्य भागों में बांटा गया है—बाह्य तप, जो बाहर से दिखाई देता है, और अंतरंग तप, जो आत्मा के भीतर होता है। इन दोनों के 6-6 भेद मिलाकर कुल 12 तप होते हैं, जो आत्मशुद्धि एवं कर्मक्षय में सहायक होते हैं।

12 तपों का स्वरूप

बाह्य तप: बाहरी साधना—शरीर और भोजन से संबंधित

बाह्य तप मुख्य रूप से शरीर और खान-पान के संयम से संबंधित है, जो अंतरंग तप की नींव रखता है।

1. **अनशन तप:** आत्मशुद्धि के लिए एक निश्चित समय तक भोजन का त्याग करना अर्थात उपवास रखना। इसका उद्देश्य केवल शरीर को कष्ट देना नहीं, बल्कि इंद्रियों की चंचलता को रोकना है।
2. **अवमौदर्य (ऊनोदर) तप:** अपनी भूख से कम भोजन करना। यदि चार रोटी की भूख है तो दो या तीन रोटी ही खाना, ताकि आलस्य न आए और साधना में मन लगे।
3. **वृत्ति-परिसंख्यान तप:** भोजन ग्रहण करने से पहले मन में कोई विशेष नियम या प्रतिज्ञा धारण करना। जैसे—आज यदि इस गली में सफेद गाय दिखाई देगी, तभी आहार ग्रहण करूंगा/करूंगी। इच्छाओं को सीमित करने का यह एक विशेष साधन है।
4. **रस-परित्याग तप:** जीभ के स्वाद पर नियंत्रण पाने के लिए दूध, दही, घी, तेल, मीठा या नमक जैसे रसों का पूर्ण या आंशिक त्याग करना।
5. **विविक्त-शय्यासन तप:** एकांत, शांत और निर्जन स्थान पर बैठना या सोना, जहां सांसारिक कोलाहल न हो और ध्यान में विघ्न न पड़े।
6. **काय-क्लेश तप:** शरीर को आराम की आदत न डालकर उसे सर्दी-गर्मी जैसे मौसम के अनुकूल ढालना और ध्यान की कठिन मुद्राओं में स्थिर रखना, ताकि देह के प्रति मोह कम हो।

अंतरंग तप: भीतरी साधना मन और आत्मा से संबंधित

बाहरी तप तब तक अधूरा है, जब तक मन भीतर से शुद्ध न हो। अंतरंग तप आत्मा की आंतरिक शुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति से जुड़ा है।

1. **प्रायश्चित तप:** जाने-अनजाने में हुई अपनी गलतियों या पापों को गुरु के सामने स्वीकार करना और उनके सुधार के लिए प्रायश्चित करना।
2. **विनय तप:** देव-शास्त्र-गुरु, बड़ों और गुणी जनों के प्रति मन, वचन और काय से आदरभाव रखना। अहंकार को दूर करने के लिए विनय महत्वपूर्ण साधन है।
3. **वैयावृत्य तप:** साधुओं, रोगियों, वृद्धों अथवा धर्ममार्ग पर चलने वाले जीवों की निःस्वार्थ भाव से सेवा और सहायता करना।
4. **स्वाध्याय तप:** आलस्य छोड़कर पवित्र ग्रंथों का अध्ययन करना, धर्म का चिंतन-मनन करना और आत्मज्ञान को बढ़ाना। स्वाध्याय को परम तप कहा गया है।
5. **व्युत्सर्ग तप:** शरीर, धन, मकान और यहां तक कि राग-द्वेष जैसे आंतरिक विकारों के प्रति ममत्व एवं मोह का त्याग करना।
6. **ध्यान तप:** अपने मन की चंचलता को रोककर उसे एकाग्र करना और आत्मा के शुद्ध स्वरूप में लीन होने का प्रयास करना। यह आत्मिक साधना का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है।

''उत्तम तप धर्म'' हमें सिखाता है कि इच्छाओं के पीछे भागना गुलामी है और इच्छाओं को जीत लेना ही सच्ची स्वतंत्रता की दिशा में कदम है। जब हम इन 12 तपों को अपने जीवन में अपनी शक्ति के अनुसार छोटे-छोटे संकल्पों के रूप में अपनाते हैं, तो हमारा जीवन शांत, निर्मल और आनंदमय बन सकता है।

आइए, इस महान पावन पर्व पर हम सभी संकल्प करें कि अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखने का प्रयास करेंगे और उत्तम तप धर्म को सार्थक बनाएंगे। महाभाग्य से मिली मनुष्य पर्याय को तप रूपी अग्नि में तपाकर कुंदन बनाने का प्रयास करेंगे।

इच्छाओं के पीछे भागना तो केवल संसार बढ़ाना है,
तप की पावन अग्नि में ही कर्मों के मैल को जलाना है।
कठिन नहीं है राह मुक्ति की, बस एक कदम बढ़ाना है,
12 तपों को जीवन में लाकर, प्रभु-सा रूप पाना है।।

उत्तम तप धर्म की जय

उत्तम संयम धर्म पर 5 उपवासधारी बहनों के पारणे संपन्न

एकल नृत्य में चर्या जैन और क्रिया जैन विजेता, सुगंध दशमी पर्व पर मंदिर में धूप खेवन का आयोजन

डडूका. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन समाज डडूका, जैन युवा समिति डडूका एवं दिगंबर जैन पाठशाला डडूका के संयुक्त तत्वावधान में रात्रि में एकल नृत्य प्रतियोगिता आयोजित की गई। आयोजन वीरेंद्र जैन के संयोजन तथा पलाश जैन एवं रोकी गांधी के निर्देशन में हुआ। प्रतियोगिता में 14 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। जूनियर वर्ग में क्रिया जैन ने प्रथम तथा जियाना जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वहीं, सीनियर वर्ग में चर्या जैन प्रथम एवं सृष्टि जैन द्वितीय स्थान पर रहीं। विजेताओं को सम्मानित किया गया। इसी क्रम में उत्तम संयम धर्म एवं दशलक्षण महापर्व के छठे दिन प्रातः गर्भगृह में मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ का जलाभिषेक कोमल, प्रतीक शाह, अशोक शाह, जय श्री, दीपांक्षी एवं चिराग शाह परिवार द्वारा किया गया। मुख्य कार्यक्रम स्थल पर विराजित भगवान आदिनाथ का जलाभिषेक कांतिलाल शाह, जय श्री शाह, अंकुश एवं अंकित शाह परिवार द्वारा किया गया। इस अवसर पर समाज की ओर से जय श्री कांतिलाल शाह को जन्मदिन की हार्दिक बधाई दी गई। अपराह्न में समाजजनों ने पार्श्वनाथ जिनालय सभागार में भगवान शीतलनाथ की विशेष भक्ति की। कार्यक्रम के दौरान 5 उपवासधारी बहनों के पारणे संपन्न हुए। वहीं, सुगंध दशमी पर्व के अवसर पर मंदिर में धूप खेवन का आयोजन किया गया।

श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, प्रताप नगर में भव्य कवि सम्मेलन का सफल आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, प्रताप नगर सेक्टर-8, जयपुर में धर्म जागृति महिला मंडल के तत्वावधान में शनिवार, 19 सितंबर 2026 को ''भव्य कवि सम्मेलन'' का सफल एवं गरिमामय आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन मां विशुद्ध संत भवन में सायं 8:00 बजे से किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती अलका जी गर्वित जी जैन रहीं। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलनकर्ता श्री नरेश जी निकेत जी पांड्या, बनेठा वाले द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। कवि सम्मेलन का उद्देश्य जैन संस्कृति, समाज एवं राष्ट्रभावना से ओत-प्रोत काव्य के माध्यम से साहित्य एवं संस्कृति के प्रति जागरूकता का संदेश देना रहा। कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों से आमंत्रित सुप्रसिद्ध कवियों ने अपनी रचनाओं एवं काव्य प्रस्तुतियों से उपस्थित श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। कार्यक्रम में डॉ. अंशुल जैन ''आराध्यम'' (इंदौर), अमित जैन 'मौलिक' (जबलपुर) एवं कवि कान पंडित (नाथद्वारा) ने अपनी प्रभावशाली काव्य प्रस्तुतियां दीं। कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से धर्म, संस्कार, जैन संस्कृति, सामाजिक चेतना, राष्ट्रभावना एवं मानवीय मूल्यों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। कवि सम्मेलन के दौरान काव्य की विविध प्रस्तुतियों ने वातावरण को साहित्यिक एवं सांस्कृतिक रंग से सराबोर कर दिया। उपस्थित समाजबंधुओं एवं साहित्यप्रेमियों ने कवियों की प्रस्तुतियों का उत्साहपूर्वक आनंद लिया और उनकी रचनाओं की सराहना की। कार्यक्रम के सफल आयोजन में धर्म जागृति महिला मंडल की अध्यक्ष अनीता जैन ईटून्दा, मंत्री शेफाली जैन काला, कोषाध्यक्ष रेखा जैन पीपलिया सहित उपाध्यक्ष, संयोजक, प्रचार मंत्री, संगठन मंत्री, सांस्कृतिक मंत्री प्रियंका पाटनी, सह-सांस्कृतिक मंत्री एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्यों का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम के अंत में श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर समिति एवं सकल दिगंबर जैन समाज, प्रताप नगर, जयपुर की ओर से मुख्य अतिथि, दीप प्रज्वलनकर्ता, आमंत्रित कवियों, अतिथियों, समाजबंधुओं एवं सभी सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया गया।

दिवेर विजय महोत्सव : रंग, रफ्तार और रणगाथा में जीवंत हुआ मेवाड़ का शौर्य

राष्ट्रीय चित्रकला कार्यशाला में कैनवास पर उतरा इतिहास, फोटो वॉक और हॉवरबोर्ड ने जोड़ा आधुनिक रोमांच

उदयपुर. शाबाश इंडिया

प्रताप गौरव केंद्र ''राष्ट्रीय तीर्थ'' में चल रहा दस दिवसीय दिवेर विजय महोत्सव-2026 सोमवार को एक ऐसे सृजन पर्व में बदल गया, जहां एक ओर रंग और रेखाएं मेवाड़ के इतिहास को कैनवास पर जीवंत कर रही थीं, तो दूसरी ओर कैमरे, स्मार्टफोन और इलेक्ट्रिक हॉवरबोर्ड नई पीढ़ी को उसी गौरवशाली विरासत से आधुनिक अंदाज में जोड़ते नजर आए। महाराणा प्रताप के शौर्य, स्वाभिमान और दिवेर की विजयगाथा को समर्पित महोत्सव में कला, संस्कृति, तकनीक और युवा ऊर्जा का अनूठा संगम देखने को मिला। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप समिति के अंतर्गत संचालित प्रताप गौरव केंद्र में उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, पटियाला, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार तथा प्रताप गौरव केंद्र के संयुक्त तत्वावधान और संस्कार भारती उदयपुर महानगर इकाई के सहयोग से ''मेवाड़ का सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिदृश्य'' विषय पर राष्ट्रीय चित्रकला कार्यशाला का विशेष सत्र आयोजित हुआ। उद्घाटन अवसर पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलगुरु कैलाश डागा ने देश के विभिन्न हिस्सों से पहुंचे चित्रकारों का अभिनंदन करते हुए कहा कि मेवाड़ की धरती का प्रत्येक कण त्याग, संघर्ष और शौर्य की स्मृतियों से जुड़ा है। कलाकार जब इन गाथाओं को रंगों और रेखाओं में ढालते हैं तो इतिहास केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि नई पीढ़ी के सामने दृश्य अनुभूति के रूप में जीवंत हो उठता है। उनका सृजन भावी पीढ़ियों में राष्ट्रप्रेम और सांस्कृतिक चेतना जगाने का माध्यम बनता है। कार्यशाला संयोजक प्रो. रामसिंह भाटी ने बताया कि उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, चंडीगढ़, गुजरात, जम्मू-कश्मीर और राजस्थान सहित विभिन्न राज्यों के कलाकार कार्यशाला में भाग ले रहे हैं। इनमें डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा, मनोजकुमार सकळे, कुदालैय्या हिरेमढ, घनश्याम कश्यप, डॉ. मनोज बालियान, डॉ. सुनील कुमार सिंह कुशवाहा, डॉ. दुर्जन सिंह राणा, दीपांकर रे, अभिषेक सुरेश आचार्य, विवेक दहिवले, ऋषि राज तोमर, ओंकार अशोक पवार, अद्वैत किशोर नादवडेकर, अंकुश कुमार, विजय चंद्रकांत जाधव, डॉ. मुकेश सालवी, डॉ. पुष्कर लोहार, नवल सिंह, डॉ. सुरेंद्र सिंह चुण्डावत और मांगीलाल महावर शामिल हैं। सभी कलाकारों का उपरणा ओढ़ाकर और स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मान किया गया। विशेष सत्र का आकर्षण जम्मू-कश्मीर के कलाकार अंकुश कुमार का लाइव आर्ट डिमॉन्स्ट्रेशन रहा। उन्होंने दर्शकों और विद्यार्थियों के सामने महाराणा प्रताप का प्रभावशाली चित्र उकेरा। देखते ही देखते सफेद कैनवास पर प्रताप की तेजस्वी छवि आकार लेने लगी और कला प्रेमियों ने इस सृजन प्रक्रिया को उत्सुकता से निहारा। महोत्सव में पहली बार आयोजित दो दिवसीय फोटो एवं रील मेकिंग वॉक ने भी युवाओं को खासा आकर्षित किया। प्रातः और सायं सत्रों में प्रतिभागियों ने प्रताप गौरव केंद्र के स्थापत्य, प्राकृतिक परिवेश, प्रतिमाओं और ऐतिहासिक प्रसंगों को कैमरे तथा स्मार्टफोन में अलग-अलग दृष्टिकोण से कैद किया। इस प्रयोग ने मेवाड़ की परंपरागत वीरगाथा को डिजिटल अभिव्यक्ति और सोशल मीडिया की नई भाषा से जोड़ दिया। युवाओं के रोमांच में एक नया अध्याय इलेक्ट्रिक हॉवरबोर्ड राइड ने जोड़ा। प्रताप गौरव केंद्र में 21 सितम्बर से प्रारंभ इस सुविधा का सामान्य शुल्क 250 रुपये प्रति 15 मिनट रखा गया है, जबकि दिवेर विजय महोत्सव के दौरान 26 सितम्बर तक इसे 100 रुपये के विशेष रियायती शुल्क पर उपलब्ध कराया गया है। इधर शहर में महोत्सव की गूंज नुक्कड़ नाटक 'दिवेर का रणघोष' के माध्यम से भी सुनाई दी। हिरण मगरी सेक्टर-4 चौराहे पर कलाकारों ने ओजपूर्ण संवादों और प्रभावी अभिनय से दिवेर युद्ध की स्मृतियों और महाराणा प्रताप के संघर्ष को जनमानस के सामने पुनर्जीवित किया। मंगलवार शाम नाटक का अगला मंचन पानेरियों की मादड़ी स्थित वानरेश्वर महादेव मंदिर परिसर में होगा। इस तरह दिवेर विजय महोत्सव इतिहास को केवल स्मरण करने तक सीमित न रखकर उसे कला, तकनीक, दृश्य माध्यम और जनसंवाद के जरिए नई पीढ़ी तक पहुंचाने का जीवंत मंच बन रहा है। रिपोर्टः कौशल मूंदड़ा/ फोटोः गजेंद्र कुमावत

जलझूलनी एकादशी पर सांवलिया सेठ धाम में तीन दिन बहेगी भक्ति की सरिता

रथयात्रा, शोभायात्रा, कवि सम्मेलन और भजन संध्याओं से सजेगा मंडफिया

उदयपुर. शाबाश इंडिया

मेवाड़ के सुप्रसिद्ध कृष्णधाम मंडफिया स्थित श्री सांवलिया सेठ मंदिर में जलझूलनी एकादशी का तीन दिवसीय मेला इस बार भक्ति, संस्कृति और लोकरंग का अनूठा संगम बनेगा। 21 से 23 सितंबर तक आयोजित होने वाले मेले में जहां भगवान सांवलिया सेठ की भव्य शोभायात्रा और रथयात्रा श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र रहेगी, वहीं देश के ख्यात कवियों, गायकों और लोक कलाकारों की प्रस्तुतियां उत्सव को खास बनाएंगी। मंदिर बोर्ड अध्यक्ष हजारी दास वैष्णव एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी दिनेश धाकड़ के अनुसार पहले दिन 21 सितंबर को तेजा दशमी पर दोपहर 2 बजे मंदिर परिसर से विशाल शोभायात्रा निकलेगी। विभिन्न मार्गों से गुजरती यात्रा रात करीब 8 बजे पुनः मंदिर पहुंचेगी, जहां रंगारंग आतिशबाजी के साथ इसका स्वागत होगा। इसी कड़ी में रात 9 बजे मंडफिया बाईपास स्थित उप जिला चिकित्सालय के समीप बने मंच पर अखिल भारतीय विराट कवि सम्मेलन में हास्य, वीर, श्रृंगार और गीतों की रसधारा बहेगी। शैलेश लोढ़ा, संजय झाला, शशिकांत यादव, जानी वैरागी, दीपक पारीक, शंभु शिखर, राम भदावर, चेतन चर्चित, भुवन मोहिनी, मोनिका हटिला, हीरामणि और लक्ष्मण नेपाली सहित कई कवि काव्य पाठ करेंगे। इसी दौरान मेला ग्राउंड के मीरा और गोवर्धन रंगमंच पर भजन एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियां होंगी। मेले का सबसे प्रमुख आयोजन 22 सितंबर को जलझूलनी एकादशी पर होगा। दोपहर 12 बजे मंदिर से सुसज्जित झांकियों, ढोल-नगाड़ों और जयकारों के बीच विशाल रथयात्रा रवाना होगी। भगवान का रथ सांवलिया सरोवर पहुंचेगा, जहां विधिवत पूजा-अर्चना के बाद ठाकुरजी को स्नान कराया जाएगा। वापसी में रात 8 बजे रथ मंदिर पहुंचेगा और आतिशबाजी होगी। रात 9 बजे बॉलीवुड गायक बी. प्राक अपने दल के साथ भजन संध्या एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। अन्य मंचों पर प्रकाश माली, आशा वैष्णव, सवाई भाट और मोनिका भदौरिया सहित कलाकार भजन, नृत्य और हास्य प्रस्तुतियां देंगे। अंतिम दिन 23 सितंबर को मीरा रंगमंच पर छोटू सिंह रावणा की भजन संध्या के साथ मेले का समापन होगा। तीन दिनों तक सांवलिया धाम श्रद्धा, संगीत, संस्कृति और कृष्ण भक्ति के रंग में सराबोर रहेगा।

रिपोर्ट : यौवंतराज माहेश्वरी

विरासत से समकालीन अभिव्यक्ति तक: ‘Bond to Beyond’ ने रचा कला संवाद, देश के 13 कलाकारों ने उदयपुर को देखा अपनी-अपनी रचनात्मक दृष्टि से

उदयपुर। झीलों, हवेलियों, स्थापत्य, लोकजीवन और सांस्कृतिक स्मृतियों से समृद्ध उदयपुर इस बार देशभर से आए कलाकारों की रचनात्मक दृष्टि में नए रूप में उभरा। किसी कलाकार ने शहर की स्थापत्य विरासत को रंगों में महसूस किया तो किसी ने झीलों, प्राकृतिक परिवेश और स्थानीय जीवन की संवेदनाओं को कैनवास पर उतारा। इसी रचनात्मक संवाद का माध्यम बनी तीन दिवसीय ‘Bond to Beyond’ आर्टिस्ट रेजीडेंसी एवं कला प्रदर्शनी, जिसका आयोजन Inspirit Art Gallery, Udaipur की ओर से बागोर की हवेली स्थित कला वीथी आर्ट गैलरी में किया गया।18 से 20 सितम्बर तक चली इस रेजीडेंसी का मूल विचार Heritage, Culture and Contemporary Expression रहा। इसके तहत विभिन्न शहरों से आए 13 कलाकारों ने उदयपुर की ऐतिहासिक विरासत, प्राकृतिक सौंदर्य, स्थापत्य और सांस्कृतिक परिवेश को अपने-अपने कलात्मक अनुभवों से जोड़ते हुए ड्रॉइंग और पेंटिंग तैयार कीं। खास बात यह रही कि एक ही शहर को देखने के बावजूद हर कलाकार की अभिव्यक्ति अलग रही और इसी विविधता ने प्रदर्शनी को विशिष्ट स्वर दिया।प्रदर्शनी का उद्घाटन वरिष्ठ चित्रकार एवं कला प्रेरक डॉ. हेमंत द्विवेदी, ललित शर्मा, रघुनाथ शर्मा और बसंत कश्यप ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर रेजीडेंसी में भाग लेने वाले कलाकारों को उनके रचनात्मक योगदान के लिए स्मृति-चिह्न एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।इस कला रेजीडेंसी में पुणे के अतुल गेंडले, नाथद्वारा की डॉ. मनीषा सांचिहार, किशनगढ़ के डॉ. महेश कुमार कुमावत, चित्तौड़गढ़ के डॉ. मुकेश कुमार शर्मा, उदयपुर के -डॉ. निर्मल यादव, दुर्शित भास्कर और यश खत्री, श्रीगंगानगर के डॉ. सूरज सोनी एवं रणवीर सिंह, भावनगर की निरुपमा टांक, बूंदी के सुनील कुमार जांगिड़, नई दिल्ली की विजया वेद और सवाई माधोपुर के विजय कुमावत ने भागीदारी की।प्रदर्शनी में सजी कृतियों में उदयपुर सिर्फ एक पर्यटन शहर के रूप में नहीं, बल्कि स्मृतियों, इतिहास, प्रकृति और जीवंत संस्कृति वाले संवेदनशील शहर के रूप में दिखाई दिया। कहीं स्थापत्य की रेखाएं आकर्षण का केंद्र बनीं तो कहीं रंगों के माध्यम से झीलों और स्थानीय जीवन की लय को अभिव्यक्ति मिली।रेजीडेंसी की कोऑर्डिनेटर डॉ. मनीषा सांचिहार ने बताया कि प्रदर्शनी को शहर के कलाकारों, कला प्रेमियों और समीक्षकों का अच्छा प्रतिसाद मिला। ऑक्शन हाउस के संस्थापक प्रमोद फांड, कला प्रेमी नम्रता चौकसी, डॉ. शाहिद परवेज, डॉ. युगल किशोर शर्मा, शरद भारद्वाज, राहुल माली, हेमंत जोशी, नेहा चपलोत, डॉ. सुनील निमावत, शर्मीला राठौड़, कपिल शर्मा, रौनक वर्मा, सिमरन, सुशीला गगोरिया और बापूलाल सहित अनेक कला प्रेमियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया।इस कला यात्रा का दायरा उदयपुर तक सीमित नहीं रहेगा। रेजीडेंसी में तैयार चयनित कलाकृतियां आगामी दिनों में अहमदाबाद में आयोजित होने वाले ‘The Art Fest’ में भी प्रदर्शित की जाएंगी। इससे कलाकारों को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी रचनात्मकता प्रस्तुत करने का एक और अवसर मिलेगा।Inspirit Art Gallery के संस्थापक डॉ. निर्मल यादव ने बताया कि ‘Bond to Beyond’ उनकी कला श्रृंखला का पहला प्रयास है। इसका उद्देश्य अलग-अलग क्षेत्रों के कलाकारों को साझा मंच देकर कला, विरासत और समकालीन अभिव्यक्ति के बीच संवाद को विस्तार देना है। आने वाले समय में इसी श्रृंखला के अंतर्गत रेजीडेंसी, कार्यशालाएं और प्रदर्शनियां आयोजित की जाएंगी। इस तरह ‘Bond to Beyond’ ने केवल कलाकृतियों की प्रदर्शनी नहीं लगाई, बल्कि उदयपुर की विरासत को नई रचनात्मक नजर से देखने और कलाकारों को एक-दूसरे की संवेदनाओं से जोड़ने का एक साझा मंच भी तैयार किया।

रिपोर्ट : राकेश शर्मा 'राजदीप'

क्लाइमेट के 'चक्रव्यूह' से निकलने की राह बताएगा दो दिवसीय फेस्टिवल

26-27 सितंबर को 60 से अधिक गतिविधियां, प्रकृति से जुड़ाव और पुनः उपयोग पर रहेगा जोर

उदयपुर. शाबाश इंडिया

जलवायु परिवर्तन से जुड़ी चुनौतियों को केवल चर्चा तक सीमित न रखते हुए उनके व्यावहारिक समाधान तलाशने के उद्देश्य से शहर में 26 और 27 सितंबर को दो दिवसीय ''क्लाइमेट चक्रव्यूह फेस्टिवल-2026'' आयोजित होगा। कम्यूनिटी द यूथ कलेक्टिव एवं वातार्लीप संस्था की ओर से रेनमैटर फाउंडेशन के सहयोग से होने वाले इस आयोजन का मुख्य केंद्र विद्या भवन रहेगा, जबकि शहर के 13 अन्य स्थलों पर भी गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। फेस्टिवल के लिए अब तक एक हजार से अधिक निःशुल्क पंजीकरण हो चुके हैं। संस्था की प्रतिभा पाठक ने बताया कि फेस्टिवल को इस तरह डिजाइन किया गया है कि प्रतिभागी पर्यावरण संरक्षण के तरीके केवल सुनें नहीं, बल्कि उन्हें खुद करके भी समझें। दो दिनों में 60 से अधिक गतिविधियां होंगी, जिनमें देशभर से आए विशेषज्ञ, युवा सामाजिक उद्यमी, कलाकार और क्लाइमेट कार्यकर्ता संवाद करेंगे। आयोजन की रूपरेखा तैयार करने में 150 से अधिक युवाओं और विषय विशेषज्ञों ने योगदान दिया है। महाभारत के ''चक्रव्यूह'' की अवधारणा से प्रेरित यह फेस्टिवल जलवायु, सामाजिक और आर्थिक संकटों के बीच सामूहिक समाधान की राह खोजने का प्रयास है। बर्ड वॉक, नाइट नेचर एक्सप्लोरेशन, बेयरफुट ट्रेल, साउंड्स ऑफ नेचर और अरावली हाट जैसी गतिविधियां प्रतिभागियों को प्रकृति से सीधे जोड़ेंगी। स्थानीय कारीगर पत्तल-दोना और सीड ज्वेलरी बनाना सिखाएंगे। ''जुगाड़ गैराज'' में पुरानी बोतलों को उपयोगी वस्तुओं में बदलने और ''रिपेयर कैफे'' में इलेक्ट्रॉनिक्स, साइकिल तथा कपड़ों की मरम्मत के तरीके बताए जाएंगे। प्रतिभागियों को शहर की कचरा प्रबंधन एवं जल-संचयन प्रणालियों से भी परिचित कराया जाएगा। फेस्टिवल क्यूरेटर राजेश एन. सिंह मेहर के अनुसार शाम को ''म्यूजिक, इकोलॉजी एंड हारमनी'' में शास्त्रीय गिटार वादक राघवेंद्र कुमार, लोक कलाकार रितेश गोहिया, कवि-गीतकार कविश सेठ और गायक सलमान इलाही प्रस्तुतियां देंगे। ''क्लाइमेट पासपोर्ट'' आधारित गेमिफाइड क्वेस्ट भी आकर्षण रहेगा। गतिविधियां पूरी करने पर प्रतिभागियों को गोल्ड, सिल्वर और ब्रॉन्ज स्टैम्प मिलेंगे तथा स्कोर लाइव लीडरबोर्ड पर दिखेगा। शीर्ष 30 प्रतिभागियों को 27 सितंबर को विद्या भवन में होने वाले ग्रैंड क्लोजर समारोह में सम्मानित किया जाएगा। राहुल, पारूल और सोहेल ने भी आयोजन संबंधी जानकारी साझा की।

रिपोर्ट राकेश शर्मा 'राजदीप'

चार कषाय और इंद्रियों पर नियंत्रण ही संयम धर्म

विषय भोग दुखदायी, आसक्ति दुख का मूल : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

दंगकी. शाबाश इंडिया

आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने कहा कि चार कषाय और इंद्रियों पर नियंत्रण ही संयम धर्म है। विषय भोग दुखदायी हैं और उनमें आसक्ति दुख का मूल है। उन्होंने कहा कि आत्मा शरीर रूपी वाहन पर सवार होकर चारों गतियों में परिभ्रमण की यात्रा कर रही है। जिस प्रकार नदी दो तटों के बीच बहती है और अनियंत्रित होने पर किनारे तोड़कर सर्वनाश कर सकती है, उसी प्रकार मनुष्य जीवन में पांचों इंद्रियों का संयम अत्यंत महत्वपूर्ण है। दंगकी नसियां स्थित धर्मसागर सभागृह में उत्तम संयम धर्म की विवेचना करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि विषय भी विष के समान हैं और संयम रत्न के समान है। विषय भोग रूपी चोर से इसकी रक्षा धर्म के माध्यम से की जाती है। पांच महाव्रत धारण करना, पांच समितियों का पालन करना, तीन गुप्तियों को धारण करना, चार कषायों का निग्रह करना तथा मन, वचन, काय एवं पांचों इंद्रियों पर विजय प्राप्त करना ही संयम कहलाता है। यह मंगल उपदेश उन्होंने उत्तम संयम धर्म की विवेचना के दौरान दिया। डा. राजेश पंचोलिया के अनुसार, आचार्य श्री ने आगे बताया कि संयम आंतरिक शक्तियों को विकसित करता है। जिस प्रकार वाहन को ब्रेक और नदी को तट नियंत्रित करते हैं, उसी प्रकार आत्मा एवं शरीर को संयम रूपी ब्रेक से नियंत्रित किया जाता है। उन्होंने कहा कि संसार-परिभ्रमण में जीव ने प्रत्येक गति में पांचों इंद्रियों के विषयों का उपभोग किया है। सभी पदार्थों को देखा, सूंघा और चखा है। एक गाथा के माध्यम से आचार्य श्री ने स्पष्ट किया कि विषय भोग साररहित, कष्टदायक और दुख देने वाले हैं। विषय पुद्गल हैं और विषय भोगों में आसक्ति उचित नहीं है। व्यक्ति को हित-अहित का भेद समझना जरूरी है। विषय भोग दुख हैं और यही विपत्ति का मूल हैं। आचार्य श्री ने खान-पान, व्यसन एवं परिग्रह की चर्चा करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यक और अनावश्यक का भेद समझना चाहिए। संयम धर्म केवल सुनने का नहीं, बल्कि जीवन में ग्रहण करने का विषय है। आचार्य परंपरा संयमित होकर बाल ब्रह्मचर्य का पालन करती है। आचार्य श्री ने प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के संघपति का उल्लेख करते हुए बताया कि संघपति जवेरी परिवार ने भी यात्रा कराने के बाद मुनि दीक्षा ग्रहण की। एक साधु और एक श्राविका एक माह के 32 उपवास कर रहे हैं, वहीं अन्य साधु, श्रावक एवं श्राविकाएं दशलक्षण महापर्व के 10 उपवास सीकर में कर रहे हैं। उनसे सभी को प्रेरणा लेकर अपनी सामर्थ्य के अनुसार छोटे-छोटे नियम ग्रहण करने चाहिए। आचार्य श्री ने कहा कि संयम धर्म जीवन को धार्मिक बनाने का संदेश देता है। मृत्यु के भय से डॉक्टर की सलाह पर व्यक्ति कई वस्तुओं और भोजन का त्याग कर देता है, किंतु साधु-संत आत्मा के हित की बात कहते हैं, तो उसे मानने में

संकोच करता है। उन्होंने जीवन में संयम को अपनाने की प्रेरणा दी। आचार्य श्री के उपदेश से पूर्व आर्यिका श्री देशनामति जी के भी उपदेश हुए। दोपहर में तत्वार्थ सूत्र के माध्यम से आचार्य श्री ने 8 कर्मों की विवेचना की। नगर के विभिन्न जिनालयों में अष्टकर्मों के नाश की भावना से सुगंध दशमी पर्व मनाया गया। इस अवसर पर दिगंबर जैन समाज के श्रद्धालुओं ने अग्नि पर धूप का क्षेपण किया। रात्रि में महाआरती में हजारों श्रद्धालु जुलूस के माध्यम से शामिल हुए। इसके बाद सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। दिनभर चले धार्मिक अनुष्ठानों में सभी आयु वर्ग के श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर धर्मलाभ लिया।

पर्वों के पर्वराज का पांचवां चरण : उत्तम सत्य

दिखावे का जीवन बहुत जी लिया, अब यथार्थ से जुड़कर सत्य का जीवन जीएं : आचार्य प्रसन्न सागर

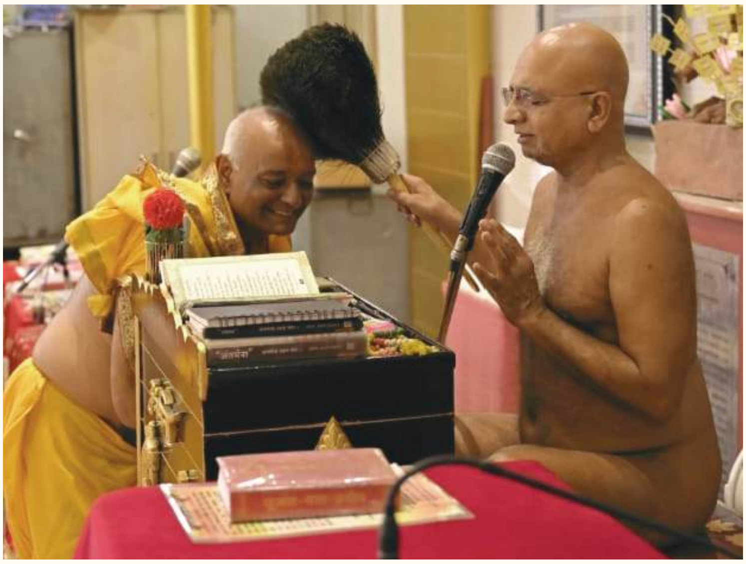

सोनकच्छ/औरंगाबाद. शाबाश इंडिया। पुष्पगिरी तीर्थ, सोनकच्छ में गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर महाराज के सानिध्य में वर्षायोग के लिए विराजमान व्रत चक्रवर्ती, पट्ट विभूषण अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज एवं उपाध्याय श्री पियूष सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में पर्युषण महापर्व श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। पर्युषण महापर्व के पांचवें चरण उत्तम सत्य धर्म के अवसर पर आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज ने धर्मसभा में श्रद्धालुओं को सत्य के वास्तविक स्वरूप का संदेश दिया। आचार्य श्री ने कहा, ''सत्य नहीं होता परिभाषित, रहता मात्र अनुभवगम्य।'' सत्य को शब्दों का जामा नहीं पहनाया जा सकता, क्योंकि जो नग्न है, वही सत्य है। उन्होंने कहा कि मनुष्य अपनी उम्र से 9 महीने बड़ा होता है, यह बात केवल एक ही व्यक्ति जानता है। इस उदाहरण के माध्यम से उन्होंने सत्य के उस स्वरूप की ओर संकेत किया, जो शब्दों और दिखावे से परे है।

सत्य को शब्दों में बांधा नहीं जा सकता

आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज ने कहा कि धरती, आकाश, चांद-तारे, पेड़-पौधे, सागर, सरिता और प्रकृति का प्रत्येक जीव अपने मूल स्वरूप में सत्य को प्रकट करता है। प्रकृति की सहजता ही उसका वास्तविक सौंदर्य है। उन्होंने कहा कि नग्नता प्रकृति प्रदत्त उपहार है, जिसे नकारा नहीं जा सकता। इसी संदर्भ में दिगंबर जैन संतों की नग्नता को उन्होंने प्रकृति और सत्य की सहजता से जोड़ा। उन्होंने कहा कि उत्तम सत्य धर्म हमें दिखावे के जीवन से बाहर निकलकर यथार्थ से जुड़ने की प्रेरणा देता है। ''दिखावे का जीवन बहुत जी लिया, अब यथार्थ के जीवन से जुड़ें और सत्य का जीवन जीएं।''

आकाश की कल्पनाओं में नहीं, धरती के यथार्थ में जीएं

आचार्य श्री ने कहा कि मनुष्य आज कल्पनाओं के आकाश में उड़ रहा है और इसी कारण सत्य के दर्शन से वंचित होता जा रहा है। उन्होंने कहा कि हम जिस पृथ्वी पर रहते हैं, जिस पर चलते हैं, जीवन जीते हैं और अंततः इसी धरती में विलीन हो जाते हैं, उसकी वास्तविकता को भूलकर केवल आकाश की बातें करते हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य अक्सर कल्पनाओं और अपने 'मैं' को मजबूत करने में लगा रहता है। यही अहंकार उसे सत्य से दूर करता है। सत्य एक है, जबकि असत्य अनंत हैं। धर्म सत्य है, अग्नि सत्य है और मृत्यु भी सत्य है।

'जो बांध ले, वह सत्य नहीं, सम्प्रदाय है'

आचार्य श्री ने कहा कि जो सत्य मनुष्य को बांध दे, वह सत्य नहीं, बल्कि सम्प्रदाय है। सम्प्रदाय बांधता है, जबकि सत्य मुक्त करता है। सत्य मुक्ति का मार्ग है और सत्य से बढ़कर दूसरा कोई मुक्तिदाता नहीं है। उन्होंने कहा कि सत्य ही शिव है, सत्य ही सुंदर है और सत्य ही परमात्मा है। आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज ने उत्तम सत्य धर्म के मर्म को समझाते हुए कहा कि सत्य का एक अर्थ मौन हो जाना भी है। जब शब्द अनावश्यक हो जाएं, तब मौन सत्य के और निकट ले जाता है। उन्होंने आधुनिक जीवन में मोबाइल के बढ़ते प्रभाव पर भी कटाक्ष करते हुए कहा, ''मोबाइल आने के बाद आदमी झूठ बोलने में मास्टरमाइंड बन गया है। मोबाइल रखने का अर्थ है–झूठ बोलने का लाइसेंस।''

सुगंध दशमी पर मंडल रचना में दर्शाया जैन धर्म का दिव्य संदेश

10 कलश दशलक्षण धर्म और 4 स्वस्तिक चार गतियों के प्रतीक

इंदौर. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, जबरी बाग नसिया जी, इंदौर में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर उत्तम संयम धर्म एवं सुगंध दशमी पर्व पर विश्व शांति के संदेश के साथ जैन धर्म के दिव्य संदेश को सुंदर मंडल रचना के माध्यम से दर्शाया गया। मंडल रचना में 10 कलश दशलक्षण धर्म के प्रतीक हैं। इसके मध्य में सिद्धचक्र बनाया गया है, जबकि 4 स्वस्तिक चार गतियों के प्रतीक हैं। मंडल के माध्यम से संसार से सिद्धत्व की ओर ले जाने वाले जैन धर्म के संदेश को दर्शाया गया है। नसिया जी, इंदौर में तैयार की गई इस मंडल रचना में चारों गतियों के बीच 10 धर्मों का आचरण आत्मशुद्धि की ओर ले जाने का संदेश देता है। मंडल रचना के माध्यम से यह बताया गया कि दशलक्षण धर्म का आचरण करते हुए जीव संसार के बंधनों से ऊपर उठकर आत्मकल्याण एवं सिद्धत्व की दिशा में आगे बढ़ सकता है। इस मंडल रचना में समाज के महेंद्र कुमार जैन, राजेंद्र कुमार जैन, राजेश जैन, अश्विनाश जैन, विशाल जैन, उज्ज्वल जैन काजू, आकाश जैन, सचिन जैन, दीपक जैन, राजीव जैन एवं जितेंद्र कोरिया जिमी सहित महिला मंडल एवं बच्चों ने भी सहयोग किया। यह जानकारी श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, नसिया जी के मीडिया प्रभारी हरिहर भैया ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से दी।

प.पू. गुजरात गौरव गणिनी श्रमणी आर्यिका श्री 105 शुभमति माताजी का 52वां अवतरण दिवस समारोह सानंद संपन्न

मधुवन, शिखरजी सिद्ध क्षेत्र (झारखंड). शाबाश इंडिया

श्री अजितनाथ दिगंबर जैन मंदिर के शांतिनाथ धाम के तलघर स्थित विशाल प्रांगण में परम पूज्य गुजरात गौरव गणिनी श्रमणी आर्यिका श्री 105 शुभमति माताजी का 52वां अवतरण दिवस समारोह बड़े धूमधाम एवं भक्तिभाव के साथ सानंद संपन्न हुआ। इस अवसर पर माताजी सहित सभी श्रावक-श्राविकाएं वाद्य यंत्रों के साथ जुलूस के रूप में झूमते-गाते हुए पंडाल स्थल पर पहुंचे। पंडाल में श्री अशोक जी एवं श्री आलोक जी छाबड़ा, बड़ोदरा को गुरुमां के चरण प्रक्षालन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके बाद सामूहिक रूप से अष्टद्रव्यों से गुरुमां की विशेष पूजा-अर्चना की गई। पूजा कार्यक्रम में 9 ग्रुपों ने अष्टद्रव्यों एवं विभिन्न द्रव्यों से सजे 52 थाल गुरुमां को समर्पित किए। इसके बाद क्षुल्लिका सौभाग्यमति जी, आर्यिका सोमश्री जी, मुनि श्रमणसागर जी, मुनि श्री वत्ससागर जी, आचार्य श्री सच्चिदानंद महाराज एवं मुनि श्री सुयत्न सागर जी सहित साधु-साध्वियों ने विनयांजलि अर्पित की। इस अवसर पर साधु-साध्वियों ने बताया कि गुजरात गौरव गणिनी श्रमणी आर्यिका श्री 105 शुभमति माताजी ने वर्ष 2003 में आर्यिका दीक्षा ग्रहण करने के बाद से ही अपने संघ का विस्तार प्रारंभ किया। परिणामस्वरूप आज 27 पिच्छियों का विशाल संघ तैयार करने का श्रेय गुरुमां को प्राप्त हुआ है। लगभग 24 वर्षों के दीक्षा काल में उन्होंने धर्म एवं आध्यात्मिक गतिविधियों को निरंतर आगे बढ़ाया है। माताजी के लगातार 4 चातुर्मास मुंबई में तथा वर्तमान में लगातार 5वां चातुर्मास सम्मेद शिखरजी में चल रहा है। प्रतिदिन 48 दीपकों से भक्तामर विधान किया जाता है। इसके साथ ही वर्षभर में भक्तों की इच्छानुसार लगभग 100 से 125 विभिन्न विधान भी संपन्न होते रहते हैं।

आशीर्वाद विला में गणेशोत्सव के छठे दिन बच्चों ने दिखाई चित्रकला प्रतिभा

इंदौर. शाबाश इंडिया। निपानिया स्थित आशीर्वाद विला सोसायटी में गणेशोत्सव के छठे दिन बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। उत्सव समिति की ओर से प्रतिभागी बच्चों को चित्र बनाने के लिए ड्राइंग शीट उपलब्ध कराई गई। बच्चों ने गणेशजी एवं गणेशोत्सव से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपनी कल्पनाओं को रंगों के माध्यम से कागज पर उकेरा। प्रतियोगिता में बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपनी रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उत्सव समिति ने बताया कि प्रतियोगिता में शामिल सभी बच्चों को प्रोत्साहित किया जाएगा। गणेश विसर्जन के अवसर पर प्रतिभागी बच्चों को सम्मानित किया जाएगा। समिति का उद्देश्य उत्सव के माध्यम से बच्चों में रचनात्मकता, सहभागिता एवं सांस्कृतिक जुड़ाव की भावना को बढ़ावा देना है।

दशलक्षण महापर्व के छठे दिन लार में "उत्तम संयम धर्म" और "धूप दशमी" उल्लास से मनाई

लार (टीकमगढ़). शाबाश इंडिया

दशलक्षण महापर्व के छठे दिन दिगंबर जैन मंदिर लार में "उत्तम संयम धर्म" एवं "धूप दशमी" पर्व श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। सुबह से ही मंदिर में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। भक्तों ने भगवान का अभिषेक किया तथा जगत कल्याण की कामना के लिए वृहद महाशांतिधारा की गई। अभिषेक का सौभाग्य विनोद जैन तथा महाशांतिधारा का सौभाग्य डॉ. शिखरचंद्र जैन एवं विपिन जैन को प्राप्त हुआ। श्रद्धालुओं ने विशेष पूजा-अर्चना कर अपने जीवन में संयम धारण करने का संकल्प लिया। दोपहर में उत्तम संयम धर्म के साथ धूप दशमी पर्व भी भक्तिभाव से मनाया गया। श्रद्धालुओं ने जैन मंदिर पहुंचकर भगवान के चरणों में धूप अर्पित की, जिससे पूरा मंदिर परिसर और आसपास का वातावरण सुगंधित एवं भक्तिमय हो उठा। सुबह श्रावक-श्राविकाओं ने पारंपरिक केसरिया एवं धार्मिक परिधान धारण कर तीर्थंकर प्रतिमाओं का विधि-विधान से अभिषेक किया। इसके बाद विश्व कल्याण की भावना से शांतिधारा की गई।

संगीतमय पूजन और जयकारे

मंत्रोच्चारण एवं घंटनाद के बीच भगवान की सामूहिक आरती की गई। मंदिर परिसर में श्रद्धालु प्रभु भक्ति में झूमते नजर आए और भक्तों ने नृत्य कर अपनी भक्ति व्यक्त की। मुकेश जैन लार ने उत्तम संयम धर्म की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि मन, वचन और काय पर नियंत्रण रखना ही वास्तविक संयम है। जीवन में सही मार्ग पर चलने तथा आत्मा की शुद्धि के लिए संयम अत्यंत आवश्यक है। शाम को मंदिर में विशेष महाआरती का आयोजन किया गया। इसके बाद देर रात तक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। तंबोला प्रतियोगिता ने श्रद्धालुओं का मन मोह लिया और कार्यक्रम में उत्साह का माहौल बना रहा।

दशलक्षण महापर्व के छठे दिन उत्तम संयम धर्म की आराधना

सुगंध दशमी पर मंदिरों में गूंजे भक्ति के स्वर, श्रद्धालुओं ने अर्पित की धूप

टोंक. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन समाज द्वारा मनाए जा रहे दशलक्षण महापर्व के अंतर्गत सोमवार को छठे दिन उत्तम संयम धर्म की श्रद्धापूर्वक आराधना की गई। इस अवसर पर नगर के विभिन्न जिनालयों में प्रातःकाल से ही श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। मंदिरों में अभिषेक, शांतिधारा, पूजन एवं विधान के आयोजन हुए। वहीं, सुगंध दशमी के पावन अवसर पर श्रद्धालुओं ने जिनालयों में धूप अर्पित कर वातावरण को सुगंधित कर दिया। समाज के अध्यक्ष भागचंद फूलेता, प्रवक्ता पवन कंटान एवं विकास जागीरदार ने बताया कि श्री दिगंबर जैन बड़ा मंदिर, तख्ता टोंक में प्रातःकाल श्रीजी के अभिषेक एवं शांतिधारा के साथ धार्मिक कार्यक्रमों का शुभारंभ हुआ। इसके पश्चात चल रहे दशलक्षण महामंडल विधान में छठे दिन उत्तम संयम धर्म की विधिपूर्वक पूजा-अर्चना की गई। साथ ही, सुगंध दशमी के पावन अवसर पर विशेष पूजा भी संपन्न हुई। श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव के साथ पूजन में भाग लेकर धर्मलाभ लिया। उन्होंने बताया कि जैन दर्शन में संयम को आत्मकल्याण का महत्वपूर्ण साधन माना गया है। संयम मनुष्य को इंद्रियों एवं विषय-वासनाओं पर नियंत्रण रखने तथा आत्मा की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। दशलक्षण महापर्व के दौरान श्रद्धालु इन 10 धर्मों के माध्यम से आत्मशुद्धि, त्याग एवं साधना का संकल्प लेते हैं। इस अवसर पर कमल सर्राफ, सुनील सर्राफ, मंत्री धर्मेंद्र पासरोटिया, मंत्री टोनी आंडरा, सोनू पासरोटिया, पुनीत जागीरदार, नवीन खुरेड़ा, ज्ञान संघी, मनीष अतार, नरेंद्र अतार, आकाश बोरदा, दीपू बोरदा, नवीन आंडरा, चेतन आंडरा, जीवेंद्र आंडरा, अर्पित छामुनिया, टोनू सर्राफ, विवेक नारोली, सुमित जागीरदार एवं उदित फागी सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे।

नसिया अमीरगंज में भी हुई उत्तम संयम धर्म की पूजा

इधर, श्री दिगंबर जैन नसिया अमीरगंज, टोंक में भी दशलक्षण महापर्व के छठे दिन उत्तम संयम धर्म की विशेष पूजा की गई। प्रातःकाल श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव के साथ श्रीजी का अभिषेक एवं शांतिधारा संपन्न की। इसके पश्चात पंडित बृजेश जी शास्त्री, महुआ के सानिध्य में चल रहे श्री तीन लोक महामंडल विधान में इंद्र-इंद्राणियों ने विधि-विधान एवं भक्तिभाव के साथ श्रीफल के अर्घ्य समर्पित किए। सुगंध दशमी के अवसर पर शाम को बड़ी संख्या में श्रद्धालु मंदिरों में धूप खेवन के लिए पहुंचे। श्रद्धालुओं द्वारा जिनालयों में श्रद्धा एवं भक्ति के साथ धूप अर्पित करने से पूरा मंदिर परिसर सुगंधित हो उठा। धूप खेवन के दौरान श्रद्धालुओं ने धर्म आराधना करते हुए सुख-शांति एवं मंगल की कामना की। इस अवसर पर मंदिर परिसर में धार्मिक वातावरण के साथ बच्चों में भी विशेष उत्साह देखने को मिला। नन्हे-मुन्ने बच्चों द्वारा भगवान एवं धार्मिक प्रसंगों पर आधारित आकर्षक झांकियां सजाई गईं, जिन्हें देखने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी।

सत्य अंतरात्मा की शुद्धि की वाणी है : आचार्य सुंदर सागर महाराज

निवाई में श्रद्धाभाव से किया भगवान का अभिषेक, दशलक्षण पर्व के पांचवें दिन उत्तम सत्य धर्म की आराधना

निवाई. शाबाश इंडिया। उपखंड मुख्यालय स्थित कृषि मंडी के सामने श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में चल रहे पर्युषण दशलक्षण महापर्व के पांचवें दिन संगीतमय उत्तम सत्य धर्म की विशेष पूजा-अर्चना एवं अनुष्ठान किया गया। सकल दिगंबर जैन समाज, निवाई के तत्वावधान में आयोजित सन्मति सुंदर श्रावक संस्कार शिविर में रविवार को उत्तम सत्य धर्म की विशेष पूजा-अर्चना की गई। इसमें त्यागी तपस्वियों सहित 200 शिविरार्थियों ने भाग लेकर उत्तम सत्य धर्म की आराधना की। चातुर्मास कमेटी के मीडिया प्रभारी विमल पाटनी जौंला ने बताया कि दशलक्षण धर्म कार्यक्रम से पूर्व मूलनायक भगवान शांतिनाथ जी के समक्ष मंदिर अध्यक्ष सुशील जैन, दिगंबर जैन अग्रवाल समाज अध्यक्ष विष्णु बोहरा, अग्रवाल समाज चौरासी ब्लॉक अध्यक्ष महेंद्र चंवरिया, वर्षायोग समिति के नेमीचंद सिरस एवं महेश मोठूका ने दीप प्रज्वलित किया। शिविर से पूर्व कार्यक्रम स्थल पर आचार्य सुंदर सागर महाराज, मुनि श्रुतांश सागर महाराज एवं आर्यिका सुलक्ष्यमति माताजी के विधिवत मंत्रोच्चार के साथ श्रद्धालुओं ने भगवान शांतिनाथ जी का अभिषेक एवं शांतिधारा की। राजेश जैन गंगवाल परिवार, जयपुर ने श्रीजी के पंचामृत अभिषेक के साथ पूजा-अर्चना का शुभारंभ किया। चातुर्मास कमेटी के प्रवक्ता विमल जौंला एवं रोनक बोहरा ने बताया कि धार्मिक शिविर में सुबह ध्यान एवं योग क्रिया के साथ दशलक्षण महापर्व के कार्यक्रमों का शुभारंभ हुआ।

विमर्श जागृति महिला मंच की प्रस्तुति "जोड़ी अनोखी"

अशोकनगर. शाबाश इंडिया। पर्वराज दशलक्षण महापर्व के पावन अवसर पर रात्रि में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में विमर्श जागृति महिला मंच की ओर से शनिवार को ''जोड़ी अनोखी'' कार्यक्रम का आयोजन गंज मंदिर जी के प्रांगण में किया गया। दिगंबर जैन पंचायत के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम की जानकारी देते हुए अध्यक्ष वैशाली बांझल, मंत्री पूजा देरखा एवं कार्यक्रम संयोजिका प्रीति मोहरी ने बताया कि कार्यक्रम का उद्घाटन सुभाष जैन कैंची ने किया। तत्पश्चात राष्ट्रीय उपमंत्री विनोद जैन भारिल्ल, दिगंबर जैन पंचायत के मंत्री राकेश अमरोद, कोषाध्यक्ष सुनील अखाई, सांस्कृतिक संयोजक नितिन बज, विपिन सिंघई, निर्मल मिर्ची एवं पंडित अशोक जैन ने चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन किया। अतिथियों का सम्मान दिगंबर जैन पंचायत के पदाधिकारियों तथा विमर्श जागृति मंच के अध्यक्ष संजय सिंघई, मनीष जैन आदि ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन स्मृति जैन भारत ने किया। मंगलाचरण के रूप में चुनमुन सिंघाड़ा ने भजन की शानदार प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में 7 प्रतिभागी जोड़ियों ने हिस्सा लिया। सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। प्राची एवं प्रतीक्षा की ओर से माता त्रिशला और माता मरुदेवी के संवाद की प्रस्तुति ने उपस्थित जनसमुदाय का मन मोह लिया। वहीं, छोटे-छोटे बच्चों द्वारा हनुमान एवं श्रीराम की भूमिका निभाना आकर्षण का केंद्र रहा। सभी जोड़ियों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां दीं, जिन्हें दर्शकों की खूब सराहना मिली। कार्यक्रम के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने वातावरण को भक्तिमय एवं मनोरंजक बना दिया। सांस्कृतिक आयोजनों की श्रृंखला में ऋषभधाम तुमैन जी में आयोजित आरती प्रतियोगिता में भी मंच की ओर से सहभागिता की गई।

महावीर के जयकारों से गूंजा मदुराई...

"जियो और जीने दो" का संदेश लेकर निकली भव्य शोभायात्रा

श्री संघ प्रवक्ता : दिनेश सालेचा, मदुराई (तमिलनाडु)

मदुराई। पर्युषण पर्व के दौरान हुई धार्मिक आराधना, तपस्या, प्रवचन एवं आध्यात्मिक गतिविधियों के बाद रविवार को मदुराई में भक्ति, श्रद्धा और उत्साह का अद्भुत संगम देखने को मिला। चातुर्मास के लिए यहां विराजित साध्वी श्री आज्ञानिधि श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-6 की पावन निश्रा में भगवान महावीर स्वामी की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में बड़ी संख्या में जैन समाज के श्रद्धालु शामिल हुए और पूरा वातावरण भगवान महावीर के जयकारों से गूंज उठा। शोभायात्रा में रथ में विराजित परमात्मा, पालकी में परमात्मा को लेकर चल रहा युवावर्ग, चौदह स्वप्न, जिनशासन ध्वज एवं आकर्षक झांकियां विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं। श्रद्धालु भक्ति गीतों की धुन पर लयबद्ध होकर झूमते हुए आगे बढ़ रहे थे। सजे-धजे रथ में विराजित भगवान महावीर स्वामी के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती रही। रंग-बिरंगे छत्र, फूलों की सजावट और धार्मिक ध्वजों से सजी शोभायात्रा ने पूरे मार्ग को भक्तिमय बना दिया। युवावर्ग पालकी में परमात्मा को लेकर जयकारों के साथ आगे बढ़ता नजर आया, वहीं बच्चे एवं समाजजन विभिन्न झांकियों में उत्साहपूर्वक सहभागी बने। मार्ग में श्रद्धालुओं ने दर्शन-वंदन कर भगवान महावीर के अहिंसा एवं करुणा के संदेश को नमन किया। श्रद्धा और उल्लास का वातावरण पर्युषण पर्व की धार्मिक भावना को जीवंत करता नजर आया। शोभायात्रा श्री सांचा सुमतिनाथजी मंदिर से प्रारंभ होकर श्री सुमतिनाथजी नया मंदिरजी होते हुए श्री सुमतिनाथजी बड़ा मंदिर पहुंची। इसके बाद नगर की चारों आवनी मौला स्ट्रीट से होते हुए शोभायात्रा का विधिवत समापन हुआ। मार्ग में श्रद्धालुओं ने भगवान महावीर के जयघोष लगाए। इस दौरान एक-दो-तीन-चार, महावीर स्वामी की जय-जयकार, त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की तथा महावीर का यही संदेश–जियो और जीने दो जैसे जयघोषों से वातावरण भक्तिमय बना रहा। जगह-जगह श्रद्धालु शोभायात्रा के दर्शन करते नजर आए।

जियो और जीने दो का दिया संदेश

श्री संघ प्रवक्ता दिनेश सालेचा ने बताया कि पर्युषण पर्व के दौरान आत्मचिंतन, संयम, क्षमा और अहिंसा की आराधना की जाती है। भगवान महावीर स्वामी के अहिंसा, सत्य, संयम, क्षमा एवं ''जियो और जीने दो'' के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से शोभायात्रा का आयोजन किया गया। शोभायात्रा में समाज के सभी वर्गों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। भव्य रथ, परमात्मा की पालकी, धार्मिक झांकियों एवं जिनशासन ध्वज से सजी शोभायात्रा ने मदुराई के वातावरण को आध्यात्मिक रंग से सराबोर कर दिया। जयघोषों और भक्ति गीतों के बीच श्रद्धालुओं की आस्था देखते ही बन रही थी।

मन, वचन और काया पर संयम ही उत्तम संयम धर्म का सार : आर्यिका संगममति

अम्बाह/मुरैना (मनोज जैन नायक)। दशलक्षण महापर्व के छठे दिन अम्बाह जैन बगीची में उत्तम संयम धर्म श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने अभिषेक, शांतिधारा, पूजन सहित विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों में उत्साहपूर्वक सहभागिता की। आर्यिका रत्न १०५ श्री संगममति माताजी ने उत्तम संयम धर्म की व्याख्या करते हुए कहा कि मन, वचन और काया पर नियंत्रण रखते हुए जीवों की रक्षा करना तथा इंद्रियों को संयमित रखना ही उत्तम संयम धर्म का सार है। संयम केवल बाहरी क्रियाओं पर नियंत्रण नहीं, बल्कि क्रोध, मान, माया और लोभ जैसी कषायों को शांत करने का माध्यम भी है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक जीव के प्रति अहिंसा, दया और करुणा का भाव रखना चाहिए। मन के संयम से विचारों में शुद्धता, वाणी के संयम से व्यवहार में मधुरता और काया के संयम से जीवन में अहिंसा व आत्मकल्याण की भावना विकसित होती है। दशलक्षण महापर्व आत्मचिंतन और आत्मशुद्धि का अवसर है।

दशलक्षण महापर्व के छठे दिन उत्तम संयम धर्म की आराधना

सुगंध दशमी पर कलशाभिषेक, शांतिधारा एवं पूजन हुए; शाम को आरती व सांस्कृतिक कार्यक्रम

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया। दशलक्षण महापर्व के छठे दिन सोमवार को उत्तम संयम धर्म की श्रद्धापूर्वक आराधना की गई। डीडवाना रोड स्थित भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर में सुबह 6:30 बजे भगवान का कलशाभिषेक एवं भगवान आदिनाथ व शांतिनाथ की शांतिधारा की गई। शांतिधारा का सौभाग्य ललित कुमार-लेखराज पहाड़िया, दिलीप कुमार-आशीष कुमार काला, अनिल कुमार-अभिषेक पांड्या एवं विजय कुमार-संजय कुमार पहाड़िया परिवार को मिला। श्रावक-श्राविकाओं ने देव-शास्त्र पूजन, सोलहकारण पूजन, धूप दशमी पूजन, दशलक्षण पूजन एवं विधान में उत्तम संयम धर्म की विशेष आराधना की। जैन दर्शन के अनुसार इंद्रियों, मन एवं कषायों पर नियंत्रण रखते हुए अहिंसा और आत्मकल्याण के मार्ग पर चलना ही उत्तम संयम है। सायंकाल मंदिर परिसर में आरती, सामायिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। तंबोला एवं अंताक्षरी में श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दिनभर मंदिर परिसर भक्तिभाव से सराबोर रहा।

उत्तम संयम धर्म जीवन की गाड़ी का ब्रेक : आचार्यश्री उदारसागरजी

मुरैना (मनोज जैन नायक)

दशलक्षण महापर्व के छठवें दिन श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पंचायती बड़ा मंदिर में ज्ञान रत्नाकर आचार्यश्री उदारसागरजी महाराज ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि मनुष्य का जीवन अनमोल है, लेकिन जीवन की सार्थकता तभी है, जब हम अपनी इच्छाओं, इंद्रियों और विकारों पर नियंत्रण रखना सीखें। संयम का अर्थ स्वयं को रोकना नहीं, बल्कि स्वयं को सही दिशा में आगे बढ़ाना है। आचार्यश्री ने जीवन को वाहन से जोड़ते हुए कहा कि बगैर ब्रेक की गाड़ी अपनी गति को नियंत्रित नहीं कर सकती और ऐसी गाड़ी मंजिल तक सुरक्षित नहीं पहुंच सकती। ठीक इसी प्रकार जीवन की गाड़ी में भी ब्रेक होना चाहिए और जीवन की गाड़ी का वह ब्रेक संयम है। जिस व्यक्ति के जीवन में संयम नहीं है, वह इच्छाओं और वासनाओं की तेज गति में बहता चला जाता है। उसे यह पता ही नहीं रहता कि उसे कहां रुकना है और किस दिशा में आगे बढ़ना है। संयम मनुष्य को रुकना, विचार करना और सही निर्णय लेना सिखाता है। उन्होंने कहा कि संसार में प्रत्येक कार्य के लिए नियम और अनुशासन आवश्यक है। सड़क पर वाहन चलाते समय हम ट्रैफिक नियमों का पालन करते हैं। लाल बत्ती पर रुकते हैं, गति सीमा का ध्यान रखते हैं और दूसरे वाहनों से सुरक्षित दूरी बनाए रखते हैं। यदि कोई व्यक्ति कहे कि मैं किसी नियम को नहीं मानूंगा तो दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती है। इसी प्रकार बिना अनुशासन का जीवन भी दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है। मनुष्य चाहे कितना भी धनवान, विद्वान अथवा प्रतिष्ठित क्यों न हो, यदि उसके जीवन में आत्मानुशासन नहीं है तो उसका जीवन सही दिशा में नहीं चल सकता।

रामाधणी मंदिर में बाबा रामदेव का विशाल जागरण

ऐलनाबाद (रमेश भार्गव)

स्थानीय रामाधणी मंदिर कमेटी ट्रस्ट ऐलनाबाद के तत्वावधान में रविवार रात बाबा रामदेव जी के विशाल जागरण एवं भजन संध्या का आयोजन किया गया। धार्मिक कार्यक्रम में क्षेत्रभर से पहुंचे सैकड़ों श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और बाबा रामदेव जी की महिमा का गुणगान सुना। कार्यक्रम का शुभारंभ विधि-विधान एवं मंत्रोच्चारण के साथ हुआ। गणेश दाल एंड फ्लोर मिल के संजय सिंगला ने मुख्य पूजन कराया। इसके बाद दीप बिल्डिंग मटेरियल के बृजलाल जाजपरा ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। वधवा बस सर्विस के राजीव वधवा ने बाबा रामदेव जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। मंच संचालन विशेश्वर शर्मा ने किया। कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध भजन गायक सांवरमल एंड पार्टी (पुल्लासर) ने एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुति दी। भजनों पर श्रद्धालु देर रात तक झूमते रहे। इस दौरान ट्रस्ट पदाधिकारियों ने सांवरमल एवं पार्टी के सदस्यों का पटका पहनाकर सम्मान किया। सोमवार सुबह विशाल अटूट भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। ट्रस्ट के सेवादारों ने व्यवस्था संभालते हुए सेवाएं दीं।

कर्मों को काटने की कला सीखनी है तो महावीर का धैर्य जीवन में उतारें : युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

युवाचार्यश्री के सान्निध्य में आत्मध्यान शिविर, दुनिया से नाता तोड़ खुद से नाता जोड़ने की साधना में जुटे 125 साधक-साधिकाएं

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

जीवन में आने वाली विषम परिस्थितियां कर्मों का परिणाम हो सकती हैं, लेकिन उनका सामना करते समय मन की स्थिति कैसी रहती है, यह हमारी साधना की परीक्षा है। भगवान महावीर ने अटूट धैर्य और समभाव के साथ कर्मों का क्षय किया। परमात्मा की स्तुति का उद्देश्य केवल उनके गुणों का गुणगान करना नहीं, बल्कि उन गुणों को अपने भीतर जागृत करने का पुरुषार्थ करना है। यह विचार श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी म.सा. ने सोमवार को शांतिभवन में 29 दिवसीय वीरथुई महाप्रभावक पुच्छिस्सुणं संपुट जाप की तीसरी गाथा के स्वाध्याय एवं सामूहिक जाप के बाद व्यक्त किए। युवाचार्यश्री ने कहा कि तीसरी गाथा में आर्य सुधर्मास्वामी अपने शिष्य जम्बूस्वामी की जिज्ञासा का उत्तर देते हुए भगवान महावीर के ज्ञान, दर्शन और धर्म का स्वरूप स्पष्ट करते हैं। उन्होंने 'क्षेत्रज्ञ' और 'खेदज्ञ' विशेषणों का अर्थ समझाते हुए कहा कि प्रभु आत्मा के वास्तविक स्वरूप, उसके स्वभाव-विभाव तथा संसार के प्राणियों के दुःख और उसके मूल कारणों को जानने वाले थे। उन्होंने 'कुशल' शब्द का मर्म समझाते हुए कहा कि जिस प्रकार नुकीली कुश घास को सावधानी से काटने के लिए दक्षता आवश्यक है, उसी प्रकार कर्मों का क्षय करते समय जागरूकता और धैर्य जरूरी है। भगवान महावीर ने प्रत्येक परिस्थिति में समभाव बनाए रखा और साधकों को भी इसी मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। युवाचार्यश्री ने कहा कि प्रभु हर परिस्थिति में ज्ञाता-द्रष्टा भाव में स्थित रहे। प्रशंसा मिलने पर आसक्त नहीं हुए और विरोध करने वाले के प्रति द्वेष नहीं रखा। उनका जीवन सिखाता है कि साधना का मूल्य प्रशंसा में नहीं, बल्कि आसक्ति से मुक्त रहने में है। ज्ञान का वास्तविक गौरव वीतरागता में है। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर का स्मरण और उनके गुणों का चिंतन साधक के भीतर साहस, समता और आत्मबल जागृत करता है। तीसरी गाथा का बार-बार जाप साधना को दृढ़ बनाता है। श्रीसंघ के मंत्री नवरतनमल भलावत एवं सुशील चपलोत ने बताया कि पुच्छिस्सुणं संपुट जाप में संत-साध्वीवृंद के साथ भीलवाड़ा एवं उपनगरों के विभिन्न श्रीसंघों से आए श्रावक-श्राविकाओं ने जाप एवं स्वाध्याय का लाभ लिया। उन्होंने बताया कि शांतिभवन में युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी, उपप्रवर्तिनी दिव्यज्योतिजी, महासती सुचेताजी एवं स्मितभाषी पियुष दर्शनाजी के सान्निध्य में 4 दिवसीय आत्मसाधना शिविर शुरू हुआ। इसमें 125 साधक-साधिकाएं सूरत में विराजित आचार्य शिवमुनिजी महाराज से जूम के माध्यम से मार्गदर्शन प्राप्त कर शरीर और आत्मा के भेद, कर्मबंध के कारणों, वीतरागता एवं मुक्ति मार्ग से जुड़े विषयों पर ध्यान का अभ्यास कर रहे हैं। शिविर संयोजक अरिहंत सिसोदिया ने बताया कि सभी साधक-साधिकाएं 4 दिनों तक मोबाइल और बाहरी संपर्क से दूर रहकर मौन साधना में लीन हैं। आचार्य शिवमुनिजी एवं युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी के मार्गदर्शन में ''मैं आत्मा हूं'' के भाव के साथ ध्यान, स्वाध्याय एवं आत्मचिंतन किया जा रहा है।

हिंदी दिवस पर प्रतिभाओं का सम्मान, 200 से अधिक प्रतिभागी हुए सम्मानित

दौसा. शाबाश इंडिया

विज्ञ छन्द विज्ञान शाला के तत्वावधान में एम. आर. मूनराइज पब्लिक स्कूल में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित चित्र, निबंध एवं कविता लेखन प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागियों के सम्मान में पुरस्कार वितरण समारोह हुआ। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र, कलम, दुपट्टा एवं माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि विज्ञ छन्द विज्ञान शाला के संस्थापक एवं अध्यक्ष बाबूलाल शर्मा बोहरा ''विज्ञ'' ने कहा कि हिंदी हमारी संस्कृति और अस्मिता का आधार है। रचनात्मक प्रतियोगिताओं से विद्यार्थियों में मौलिक चिंतन, भाषाई दक्षता और साहित्यिक अभिरुचि विकसित होती है। विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय मिमिक्री कलाकार अशोक खेड़ला ने प्रस्तुति देकर विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। सचिव कवि दिनेश तूफानी ने बताया कि हिंदी सप्ताह के दौरान ऑनलाइन एवं ऑफलाइन प्रतियोगिताओं में 200 से अधिक प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। निबंध में प्रिया कुमारी सैनी प्रथम, नितेश गुर्जर द्वितीय और कपिल शर्मा तृतीय रहे। कविता एवं चित्रकला में धीरज मीणा प्रथम, आराध्या शर्मा द्वितीय और युवराज योगी तृतीय रहे। राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ।

अखिल भारतीय श्रीमाल जैन जागृति संस्था ने कराया धार्मिक प्रश्नोत्तरी एवं जैन हाऊजी का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। अखिल भारतीय श्रीमाल जैन जागृति संस्था के तत्वावधान में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला के तहत धार्मिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं ऑनलाइन धार्मिक हाऊजी का आयोजन किया गया। इसमें 39 बाल प्रतिभाओं एवं 180 समाजजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। संस्था के सचिव डॉ. इन्द्र कुमार जैन ने बताया कि धार्मिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में 5 से 15 वर्ष आयु वर्ग के 39 बच्चों ने सहभागिता की। बच्चों से जैन धर्म, संस्कृति, सिद्धांत एवं संस्कारों से संबंधित प्रश्न पूछे गए। बच्चों ने आत्मविश्वास के साथ उत्तर देते हुए अपनी धार्मिक समझ और ज्ञान का प्रदर्शन किया। वहीं ऑनलाइन धार्मिक हाऊजी में 180 समाजजनों ने भाग लेकर अपनी ज्ञान, स्मरणशक्ति एवं जिज्ञासा का परिचय दिया। कार्यक्रम संयोजक नवल जैन ने बताया कि आयोजन में डॉ. मनोज जैन, डॉ. सुलेखा जैन, सम्यक जैन, सौम्या जैन, प्रेमचंद जैन, साधना जैन, गंतव्य जैन, सौरभ गर्ग, तृप्ति एवं पृथ्विश डाबर सहित अनेक सदस्यों का सहयोग रहा। संस्था अध्यक्ष अजय जैन ने प्रतिभागी बच्चों को बधाई देते हुए कहा कि संस्कारों से जुड़ा ज्ञान जीवन की अमूल्य संपदा है। आयोजन को सफल बनाने में समन्वयक कैलास चंद जैन तथा सह-समन्वयकों संगीता जैन, स्नेहलता जैन, पिंकी जैन, चंचल जैन एवं अंजना जैन के सहयोग के लिए संस्था ने आभार व्यक्त किया। संरक्षक ज्ञानेंद्र जैन एवं जिनेन्द्र जैन ने सभी बाल प्रतिभाओं के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की।

अविराज जैन ने किया प्रथम अभिषेक

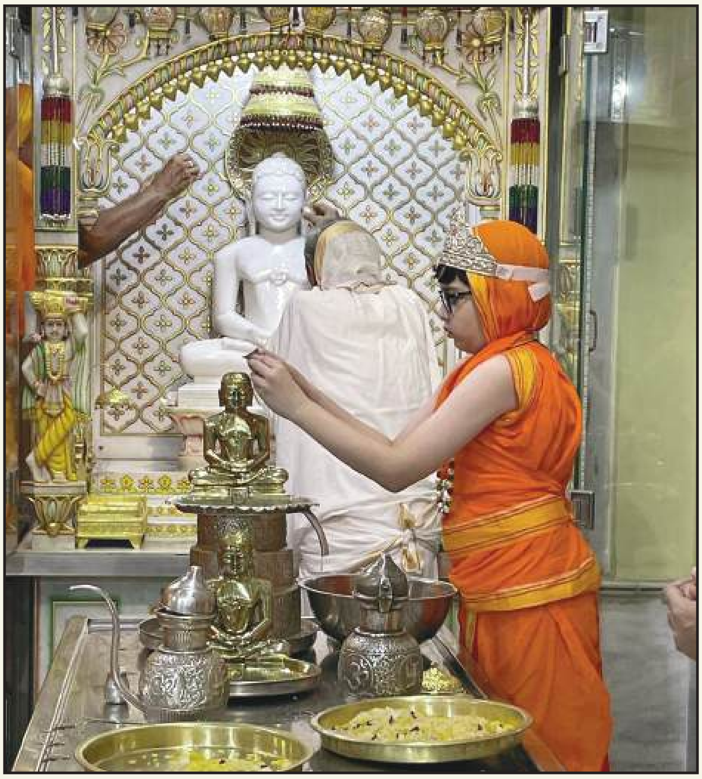

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन मंदिर, गायत्री नगर, महारानी फार्म, जयपुर में 20 सितंबर को प्रातः 6:15 बजे अविराज जैन ने प्रथम अभिषेक एवं शांतिधारा की। इस अवसर पर मंदिर प्रबंध समिति की ओर से अविराज जैन को तिलक लगाकर, माला पहनाकर एवं प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने बताया कि अविराज जैन, अरुण-सुनीता जैन के सुपुत्र तथा सुरभि-अभिमन्यु जैन के परिवार से हैं। उन्होंने बताया कि अविराज को धार्मिक संस्कार उनके नाना-नानी सुबोध एवं स्वर्णिमा से प्राप्त हुए हैं। मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष अरुण शाह ने धर्मसभा का संचालन करते हुए बताया कि गायत्री नगर जैन मंदिर में समाज के उन बालकों का सम्मान किया जाता है, जिन्होंने 8 वर्ष की आयु पूर्ण कर ली है। उन्होंने समाजजनों से आह्वान किया कि बच्चों के 8 वर्ष पूर्ण होने पर उन्हें धार्मिक संस्कारों से जोड़ने का प्रयास करें। शाह ने अविराज जैन को अनुकूलता के अनुसार नियमित अभिषेक करने का संकल्प भी कराया। इस अवसर पर मंदिर प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष विजय सोगानी, संयुक्त मंत्री संजय ठोलिया, सदस्य बसंत बाकलीवाल, राकेश पटौदी, पदम झंझरी, संतोष गंगवाल, पूर्व अध्यक्ष कैलाश छाबड़ा, अनिल टोंग्या, धूपचंद शाह, राजेंद्र सोगानी, युवा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन, आलोक शाह, प्रमिला शाह, बीना टोंग्या, वरिष्ठ अधिवक्ता विमल कुमार जैन, अशोक विधानसभा वाले, रमेश सोगानी सहित सैकड़ों श्रावक-श्राविकाएं एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे।

ओल्ड ईदगाह कॉलोनी जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व के छठे दिन उत्तम संयम धर्म की आराधना, सुगंध दशमी पर श्रद्धालुओं ने चढ़ाई धूप

आगरा. शाबाश इंडिया

ओल्ड ईदगाह कॉलोनी स्थित श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर में चल रहे दशलक्षण महापर्व के छठे दिन सोमवार को उत्तम संयम धर्म की श्रद्धापूर्वक आराधना की गई। श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव के साथ भगवान का अभिषेक, शांतिधारा एवं मंगल पूजन किया। इसके साथ ही उत्तम संयम धर्म एवं सुगंध दशमी के विशेष पूजन और धार्मिक विधान संपन्न हुए।इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने इंद्रियों एवं मन पर नियंत्रण रखने, आत्मानुशासन अपनाने तथा सदाचार के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। मंदिर परिसर में हुए धार्मिक आयोजनों से वातावरण भक्तिमय बना रहा। दशलक्षण महापर्व के छठे दिन सुगंध दशमी का भी विशेष धार्मिक महत्व रहा। श्रद्धालुओं ने भगवान को धूप अर्पित कर श्रद्धा एवं भक्ति के साथ धार्मिक अनुष्ठानों में सहभागिता की। दोपहर में मंदिर समिति की ओर से बच्चों एवं महिलाओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें उन्होंने उत्साहपूर्वक भाग लिया। धार्मिक ज्ञान के साथ मनोरंजन एवं रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से सभी को पर्व से जोड़ने का प्रयास किया गया। धर्मसभा में वक्ताओं ने कहा कि संयम मनुष्य के जीवन को अनुशासित और आध्यात्मिक रूप से उन्नत बनाने का मार्ग है। विचारों, वाणी एवं व्यवहार पर नियंत्रण रखते हुए आत्मसंयम का पालन करना ही उत्तम संयम धर्म की भावना है। दशलक्षण महापर्व आत्मशुद्धि, आत्मचिंतन एवं सदाचार की प्रेरणा देता है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सहभागिता कर धर्मलाभ लिया।

शिविर में 219 मरीजों की नेत्र जांच

जयपुर. शाबाश इंडिया

शेखावाटी अग्रवाल समाज संस्था की ओर से व एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक के सौजन्य से 163 वां निशुल्क लैंस प्रत्यारोपण शिविर रविवार को विद्याधर नगर, सेक्टर 7 स्थित महाराजा अग्रसेन हॉस्पिटल में आयोजित किया गया। जिसमें 219 मरीजों ने आंखों की जांच करवाई जिसमें 163 व्यक्तियों को चश्में वितरण किए गए एवं 12 व्यक्तियों को ऑपरेशन के लिए चयनित किया गया। संस्था के सदस्य नथमल बंसल ने बताया कि शिविर में सुरेश अग्रवाल, अरुण काबरा, रामसुंदर जयपुरिया, अनिल सिंगडोदिया, जयप्रकाश सुरेका , विशाल चमड़िया, रामानंद मोदी, नाथूराम बिजाका, सतीश मोदी, दिलीप अग्रवाल, शिवकुमार जालान, अनिल शर्मा, मुकेश बंसल, विवेक गुप्ता, मुकेश मीना व राजेन्द्र सिंह उपस्थित रहे।

जयपुर हाउस जैन मंदिर में मनाया उत्तम संयम धर्म एवं सुगंध दशमी, रंगोली प्रतियोगिता में दिखी रचनात्मकता

आगरा. शाबाश इंडिया। टीचर्स कॉलोनी, जयपुर हाउस स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में चल रहे दशलक्षण महापर्व के छठे दिन सोमवार को उत्तम संयम धर्म एवं सुगंध दशमी श्रद्धापूर्वक मनाई गई। आचार्यश्री सौभाग्यसागरजी महाराज ससंघ के मंगल सान्निध्य में आयोजित धार्मिक कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सहभागिता कर धर्मलाभ लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः ध्यान एवं योग साधना से हुआ। इसके बाद श्रद्धालुओं ने श्रीजी का अभिषेक एवं शांतिधारा कर विधि-विधानपूर्वक पूजन-अर्चन किया। अष्टद्रव्य से भगवान की पूजा करते हुए श्रद्धालुओं ने उत्तम संयम धर्म को जीवन में आत्मसात करने का संकल्प लिया। आचार्यश्री सौभाग्यसागरजी महाराज ने मंगल प्रवचन में संयम के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संयम आत्मकल्याण का महत्वपूर्ण मार्ग है। मनुष्य को इंद्रियों पर नियंत्रण रखते हुए मर्यादित जीवन एवं धर्ममय आचरण अपनाना चाहिए। सुगंध दशमी के अवसर पर श्री शांतिनाथ युवा मंडल की ओर से रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें महिलाओं ने आकर्षक रंगोलियां बनाकर अपनी कला एवं रचनात्मकता का प्रदर्शन किया। रंग-बिरंगी रंगोलियों से मंदिर परिसर की शोभा बढ़ गई।इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने विभिन्न जैन मंदिरों में धूप अर्पित कर भगवान की आराधना की। शाम को श्रीजी की मंगल आरती हुई, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। कार्यक्रम में मंदिर अध्यक्ष राकेश जैन, दीपक जैन, सुबोध पाटनी, विनोद रावंका, निधि जैन, सोनल जैन, कृतिका जैन, शिल्पी जैन, प्रिया जैन, करुणा जैन, अलका जैन, रुचि जैन सहित मंदिर समिति एवं शांतिनाथ युवा मंडल के सदस्य उपस्थित रहे।

तेजा दशमी पर रक्तदान शिविर में 37 यूनिट रक्त संग्रहित

बीजलबा गांव में तीसरी बार आयोजित हुआ रक्तदान शिविर

बूंदी. शाबाश इंडिया

तेजा दशमी के अवसर पर रक्तकोष फाउंडेशन बूंदी एवं लक्ष्मण रेखा ट्रस्ट के तत्वावधान में बीजलबा गांव में रक्तदान शिविर एवं रक्तवीर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। शिविर में 37 यूनिट रक्त संग्रहित हुआ। शिविर आयोजक एवं सचिव सीताराम मीणा तथा जिलाध्यक्ष रामलक्ष्मण मीणा नर्सिंग ऑफिसर ने बताया कि बीजलबा गांव में यह तीसरा रक्तदान शिविर है। कार्यक्रम की शुरूआत तेजाजी महाराज की प्रतिमा की पूजा-अर्चना के बाद हुई। अतिथि पूर्व सरपंच भंवरलाल मीणा, तहसील अध्यक्ष नैनवां मीणा समाज आशाराम मीणा, पूर्व सचिव सुगनचंद मीणा, पंचायत समिति सदस्य कोमल नागर, अध्यापक राधेश्याम मीणा, एसबीआई बैंक प्रबंधक आशाराम मीणा, वार्ड पंच सद्दाम हुसैन एवं रक्तकोष फाउंडेशन ब्लॉक अध्यक्ष नैनवां बलराम गुर्जर सहित अन्य लोगों ने रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया। शिविर में शारदा मीणा, आशाराम, आत्माराम, मनराज मीणा, सुगनचंद, धनराज मीणा, रमेश, हंसराज, गीताराम, सुरेश, कन्हैयालाल, लोकेश कुमार, अभिषेक, राजमल मीणा, मायाराम, राकेश, जिनेंद्र कुमार जैन, योगेश, विशाल बैरवा, सौरभ मीणा, रामकेश मीणा, धर्मराज गुर्जर, धर्मराज मीणा, प्रधान मीणा, कोमल नागर, कमलेश, रामसहाय, अर्जुन गुर्जर, शाहरुख खान, जगमोहन मीणा, सानु शर्मा, भरतराज मीणा एवं मस्तराम मीणा सहित रक्तवीरों ने रक्तदान किया। सीताराम मीणा एवं रामलक्ष्मण मीणा ने स्वस्थ युवाओं से नियमित रक्तदान करने की अपील की। उन्होंने कहा कि रक्तदान से जरूरतमंद मरीजों का जीवन बचाने में मदद मिलती है। सामान्य चिकित्सालय बूंदी ब्लड बैंक की टीम में डॉ. राजेश कुमार भरतिया, एसएलटी प्रवीण गौतम, एलटी चेतराम गोचर, कैलाश चंद वर्मा नर्सिंग ऑफिसर, हेल्पर जगदीश श्रृंगी एवं वाहन चालक कन्हैयालाल मीणा ने रक्त संग्रहण में सहयोग किया।

जैन मंदिरों में खेई धूप, महके जिनालय

भैंसलाना. शाबाश इंडिया

कस्बे सहित सिनोदिया, मंडाभीमसिंह, भादवा, लूणवा आदि गांवों के जैन मंदिरों में धूप दशमी पर्व श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। जैन समाज के राजकुमार पाटनी ने बताया कि भैंसलाना स्थित पद्मप्रभु दिगंबर जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व के छठे दिन उत्तम संयम धर्म की आराधना की गई। प्रातः श्रीजी का अभिषेक, शांतिधारा एवं पूजन सहित विभिन्न धार्मिक आयोजन हुए। दोपहर में धूप दशमी की कथा का श्रवण करने के बाद श्रावकों ने श्रीजी के समक्ष धूप अर्पित की। धूप की सुगंध से जिनालय का वातावरण भक्तिमय हो गया और पूरा मंदिर परिसर महक उठा। इस अवसर पर महावीरप्रसाद पाटनी, जिनेंद्र पाटनी, राकेश जैन, ललित जैन, सुशील पाटनी, सुभाष पाटनी, मुकेश पाटनी, अर्पित जैन, अरिहंत जैन, पंकज पाटनी एवं काव्य जैन सहित समाजजन उपस्थित रहे।

श्री दिगंबर जैन समाज ने मनाया उत्तम संयम धर्म

सुगंध दशमी पर चंदन व धूप की सुगंध से महकेंगे जिनालय, सभी मंदिरों में फहराई ध्वजा

ब्यावर (अमित गोधा)। श्री दिगंबर जैन समाज की ओर से 10 दिवसीय दशलक्षण महापर्व के तहत उत्तम संयम धर्म का पर्व श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर शहर के विभिन्न जैन मंदिरों में सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ रही। जिनालयों में विशेष पूजा-अर्चना एवं धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए गए। जैन समाज के विकल कासलीवाल ने बताया कि दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्रावकों ने श्रद्धापूर्वक विभिन्न जिनालयों के गुंबदों पर ध्वजा फहराई। सुगंध दशमी के अवसर पर जिनालयों में धूप अर्पित कर विशेष धर्म आराधना की जाएगी। चंदन एवं सुगंधित धूप से जिनालय भक्तिमय वातावरण से महक उठेंगे। उत्तम संयम धर्म मनुष्य को इंद्रियों, इच्छाओं, विचारों एवं व्यवहार पर नियंत्रण रखने की प्रेरणा देता है। संयम जीवन में संतुलन स्थापित करता है और व्यक्ति को गलत मार्ग से बचाकर आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करता है। असंयम क्षणिक सुख का आभास कराता है, लेकिन आगे चलकर अशांति और पछतावे का कारण बन सकता है। इसके विपरीत संयम व्यक्ति को बाहरी वस्तुओं पर निर्भर रहने के बजाय भीतर शांति एवं आनंद तलाशने की प्रेरणा देता है। उत्तम संयम केवल शारीरिक नियंत्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें मन, वचन और कर्म की शुद्धता भी शामिल है। विचारों, भावनाओं एवं कार्यों पर नियंत्रण रखते हुए व्यक्ति आत्मिक उन्नति की दिशा में आगे बढ़ सकता है। दशलक्षण महापर्व का यह पावन अवसर सभी को जीवन में संयम अपनाने, विकारों से दूर रहने तथा आत्मकल्याण के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

जगत के स्वरूप को जानना ही नहीं चाहते, सुख के साथ दुःख को भी जानो : राष्ट्रसंत मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज

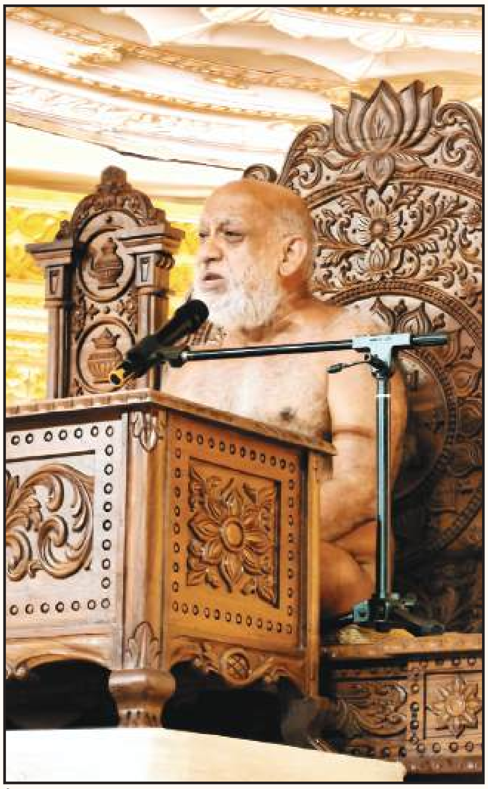

श्रावक संस्कार शिविर में 16 हजार दीपों से जगमगाया महाआरती का दृश्य, राष्ट्र निर्माण में योगदान का दिया संदेश

इंदौर. शाबाश इंडिया

दलालबाग मैदान में आयोजित विशाल अखिल भारतीय श्रावक संस्कार शिविर में हजारों शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए राष्ट्रसंत मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ने कहा कि संसार में जितने भी ज्ञेय हैं, उन सभी को जानने का प्रयास करना चाहिए। लोग भगवान को तो जानना चाहते हैं, लेकिन जगत के स्वरूप को जानने का प्रयास नहीं करते। सुख के साथ दुःख, फूल के साथ कांटों को भी जानना आवश्यक है। यदि फूल लेने जाएं और कांटों में उलझ जाएं तो कष्ट हो सकता है, इसलिए जीवन की परिस्थितियों की पूरी जानकारी होना जरूरी है। उन्होंने कहा कि ज्ञान प्राप्त करते समय पक्षपात नहीं करना चाहिए। जितना श्रद्धान सच्चे गुरु के प्रति हो, उतना ही विवेकपूर्वक गलत मार्ग दिखाने वाले व्यक्ति को भी समझना चाहिए। व्यक्ति को अपने साथ-साथ विरोधी की गतिविधियों और परिस्थितियों की भी जानकारी रखनी चाहिए। ज्ञान को केवल सुनने तक सीमित न रखें, बल्कि प्रज्ञा के माध्यम से उसका उपयोग जीवन में करें।

राष्ट्र निर्माण में योगदान का संदेश

दोपहर के विशेष सत्र में राष्ट्रसंत श्रीसुधासागरजी महाराज ने सैनिकों के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि सैनिक राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने परिवार और सुख-सुविधाओं को छोड़कर सीमा पर 24 घंटे चौकसी करते हैं। इसलिए सैनिकों के प्रति सम्मान की भावना रखना चाहिए। राष्ट्रकल्याण की भावना के साथ प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्तर पर राष्ट्र निर्माण में योगदान देना चाहिए। मध्यप्रदेश महासभा के संयोजक विजय धुर्रा ने कहा कि विशेष सत्र राष्ट्र निर्माण में सभी के योगदान को समर्पित है। व्यक्ति घर, कारखाने, कार्यालय या किसी भी क्षेत्र में रहते हुए राष्ट्र के उत्थान में अपनी भूमिका निभा सकता है। प्रतिष्ठाचार्य प्रदीप भैया ने कहा कि श्रावक संस्कार शिविर जीवन को बदलने का माध्यम है। शिविरार्थियों को प्रत्येक क्षण सावधान रहकर संतों के त्याग और तपस्या को अपने जीवन का आदर्श बनाना चाहिए।

सब कुछ पढ़ें, लेकिन सब कुछ करें नहीं

मुनिश्री ने कहा कि सब कुछ पढ़ना चाहिए, लेकिन सब कुछ करना आवश्यक नहीं है। सत्य को हेय, उपादेय और उपकारी के रूप में समझना चाहिए। हेय को छोड़कर उपकारी को अपनाना ही विवेक है। बुरा जानना सत्य धर्म है, लेकिन बुरा न सोचना संयम धर्म है। सत्य के साथ संयम को धारण करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि शिविर में प्राप्त ज्ञान का उपयोग प्रज्ञा से निर्णय लेने में करना चाहिए। जो सही और गलत का निर्णय स्वयं न कर सके, वह माता-पिता अथवा गुरुजनों से मार्गदर्शन ले सकता है।

गांधीजी की सीख आज भी उपयोगी

उन्होंने कहा कि संयम को स्वतंत्रता के अर्थ में नहीं लेना चाहिए। जिस वस्तु, व्यक्ति या संगति से नुकसान हो, उससे दूर रहना चाहिए। महात्मा गांधी की सीख ह्यबुरा मत देखो, बुरा मत बोलो और बुरा मत सुनोह्व आज भी उपयोगी है। जिसके साथ रहने से उपकार हो, ऐसी संगति को अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि दुःख से भागकर दीक्षा नहीं ली जाती, बल्कि सुख के कर्मों से भी विरक्ति आवश्यक है। व्यक्ति को अपने परिवार के प्रति प्रेम रखते हुए ऐसी अपेक्षाएं नहीं रखनी चाहिए, जिन्हें पूरा न कर पाने पर कोई मानसिक रूप से टूट जाए। मुनिश्री ने कहा कि 84 लाख योनियों में कर्मभूमि का मनुष्य ही मुनिराज को आहार देने और संयम ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकता है। दशलक्षण महापर्व भी कर्मभूमि के मनुष्य को आत्मकल्याण और धर्म आराधना का विशेष अवसर प्रदान करता है।

तीर्थों पर संयम पालना की जगह विषय भोग कर उन्हें अपवित्र मत बनाओ: आचार्य पुलकसागर

आलस्य और बहानेबाजी जीवन में संयम की पालना के सबसे बड़े बाधक

आचार्य पुलकसागर महाराज ससंघ के सान्निध्य में सुगंध दशमी पर उत्तम संयम धर्म की आराधना

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट, मेन सेक्टर, शास्त्रीनगर के तत्वावधान में सकल दिगंबर जैन समाज की ओर से भीलवाड़ा में पहली बार चातुर्मास कर रहे राष्ट्रसंत मनोज्ञाचार्य पुलकसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में शास्त्रीनगर स्थित सूर्यमहल में दशलक्षण महापर्व के छठे दिन सोमवार को सुगंध दशमी पर उत्तम संयम धर्म की श्रद्धा एवं भक्तिभाव से पूजा-अर्चना की गई। भगवान के अभिषेक एवं पूजन के दौरान श्रद्धालु भक्ति में झूमते नजर आए। आचार्य पुलकसागर महाराज ने कहा कि आलस्य और बहानेबाजी संयम पालन में सबसे बड़े बाधक हैं। इरादे रोज बनते और टूटते हैं। मन की चंचलता संयम के भाव को टिकने नहीं देती। धर्म और संयम के मार्ग में अनेक बंधन हैं, लेकिन यही बंधन मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। मनुष्य जन्म ही ऐसा अवसर है, जिसमें संयम धर्म का पालन किया जा सकता है। आचार्यश्री ने जैन तीर्थों की पवित्रता बनाए रखने का आह्वान करते हुए कहा कि तीर्थों पर संयम की साधना करने के बजाय विषय भोगों में लिप्त होकर उन्हें अपवित्र नहीं करना चाहिए। तीर्थयात्रा को मौज-मस्ती या मनोरंजन का साधन नहीं बनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पहले तीर्थयात्रा संयम और साधना का माध्यम हुआ करती थी, लेकिन आज कई जगह इसका स्वरूप बदलता जा रहा है। उन्होंने धार्मिक जीवन में बढ़ते दिखावे और भोग-विलास से बचने की आवश्यकता बताई। आचार्यश्री ने कहा कि यदि महाव्रत का पालन संभव नहीं है तो जीवन में अणुव्रतों को अपनाना चाहिए। बिना कोई नियम लिए जीवन व्यतीत नहीं करना चाहिए। नियम टूटने के डर से नियम लेना नहीं छोड़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि धर्मगुरुओं द्वारा बताए गए अनुशासन वास्तव में मुक्ति का मार्ग बन सकते हैं। उन्होंने कहा कि इंद्रियों पर नियंत्रण से जीवन में शांति और आनंद आता है। आंख, नाक, जीभ, शरीर और कान सहित इंद्रियों को वश में करने का प्रयास करना चाहिए। दर्पण में केवल चेहरा देखने के बजाय अपने चारित्र को देखने का प्रयास करें। पर्युषण पर्व जीवन में सकारात्मक बदलाव का माध्यम बनना चाहिए। परिग्रह बढ़ाकर उत्तम संयम का पालन नहीं किया जा सकता। श्री पुलकसागर चातुर्मास समिति के अध्यक्ष प्रवीण चौधरी ने बताया कि पर्युषण के तहत आयोजित पाप नाशनम् शिविर में सैकड़ों श्रद्धालु प्रातः से रात्रि तक पूजा-अर्चना एवं भक्ति में जुटे हुए हैं। छठे दिन चक्रवर्ती बनकर भगवान का अभिषेक करने का सौभाग्य शिरीष एवं मंजू जैन, इंदौर को मिला। शांतिधारा का सौभाग्य उम्मेदमल एवं प्रेमलता गंगवाल, चित्तौड़गढ़ तथा सायंकालीन महाआरती का सौभाग्य अंजना, प्रदीप एवं इशिका चौधरी को प्राप्त हुआ। दशलक्षण महापर्व के 7वें दिन मंगलवार को उत्तम तप धर्म की आराधना होगी। चातुर्मास समिति के संयोजक मनीष शाह एवं सह संयोजक लोकेश अजमेरा ने बताया कि पाप नाशनम् शिविर एवं पर्युषण की 10 दिवसीय आराधना अनंत चतुर्दशी के अवसर पर 25 सितंबर को पूर्ण होगी। इस दौरान प्रतिदिन सुबह 5:30 से 6:30 बजे तक योग, ध्यान एवं आचार्य भक्ति, 7 बजे से भगवान का अभिषेक, शांतिधारा एवं दशलक्षण धर्म पूजन तथा 9:15 से 10:15 बजे तक आचार्य पुलकसागर महाराज के प्रवचन हो रहे हैं। शाम 4 बजे धार्मिक कक्षाएं, 5:30 से 6:30 बजे तक प्रतिक्रमण एवं ध्यान साधना तथा 6:30 बजे आरती के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

सुगंध दशमी पर मनोहारी झांकी का प्रदर्शन

जयपुर. शाबाश इंडिया

सुगंध दशमी के अवसर पर महिला जागृति संघ की ओर से बड़े दीवानजी का मंदिर, मनिहारों का रास्ता में मनोहारी झांकी ''टूट गई बेड़ियां–भक्तामर के जाप से'' प्रस्तुत की गई। झांकी के माध्यम से भक्तामर स्तोत्र के जाप की महिमा एवं श्रद्धा की शक्ति का संदेश दिया गया। झांकी में दर्शाया गया कि योगिनीपुर के बादशाह सुल्तान ने रणधीर को दो बार बेड़ियों में जकड़ दिया, लेकिन भक्तामर के जाप एवं श्रद्धा के प्रभाव से रणधीर दोनों बार बेड़ियों से मुक्त हो गया। इससे प्रभावित होकर बादशाह ने रणधीर का सम्मान एवं अभिनंदन किया और उसे उसके राज्य वापस भेज दिया। अपने राजा को वापस पाकर प्रजा भी प्रसन्न हुई। संस्था अध्यक्ष शशि जैन ने बताया कि झांकी के आयोजन में मंत्री शारदा सोनी, उपाध्यक्ष साधना कला एवं सरोज जैन बेला का विशेष सहयोग रहा। झांकी का उद्घाटन श्रीमती निशा शाह एवं ललित सेठी ने किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ताराचंद बाकलीवाल, महेंद्र छाबड़ा एवं कमलेश बोहरा उपस्थित रहे।

उत्तम संयम धर्म की हुई विशेष पूजा

नसीराबाद (रोहित जैन)। दिगम्बर जैन धर्मावलंबियों के चल रहे दस दिवसीय पर्युषण पर्व के तहत सोमवार को छठे दिन उत्तम संयम धर्म की विशेष पूजा-अर्चना की गई। इस अवसर पर जैन धर्मावलंबियों ने विभिन्न जैन मंदिरों में कलशाभिषेक, शांतिधारा एवं दस लक्षण विधान का आयोजन किया। श्रद्धालुओं ने उत्तम संयम धर्म के अवसर पर अष्ट द्रव्यों से विधिवत पूजा-अर्चना कर धर्मलाभ प्राप्त किया। सोमवार को दिगम्बर जैन चैताल्य मैं भी विशेष पूजा अर्चना एवं कलशा अभिषेक शांति धारा एवं दस लक्षण विधान का भी आयोजन बडी धूमधाम से किया। दिगम्बर जैन युवा परिषद के अध्यक्ष निहालचंद बड़जात्या, एडवोकेट धर्मेंद्र जैन, प्रमेश जैन ,एवं दविश जैन ने बताया कि पर्युषण पर्व के दौरान प्रतिदिन सायंकाल श्री आदिनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर में विशेष आरती का आयोजन किया जा रहा है। आरती में जैन समाज के श्रद्धालु बड़ी संख्या में शामिल होकर धर्मलाभ प्राप्त कर रहे हैं।

निशुल्क मिर्गी रोग शिविर में 85 रोगी हुए लाभान्वित

गुलाबपुरा (रोहित जैन)। श्री प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारक समिति गुलाबपुरा की ओर से माह के तीसरे रविवार को 20 सितंबर को संस्था परिसर में निशुल्क मिर्गी रोग शिविर आयोजित किया गया। संस्था के मंत्री पदम चंद खटोड़ ने बताया कि शिविर में राजस्थान हॉस्पिटल, जयपुर के वरिष्ठ न्यूरो फिजिशियन डॉ. विक्रम बोहरा ने सेवाएं प्रदान कीं। शिविर में 85 मरीजों का उपचार एवं परामर्श किया गया, जिनमें 9 नए मरीज शामिल थे। मरीजों को निशुल्क दवाएं भी वितरित की गईं। शिविर में रामलाल ने मरीजों को मिर्गी रोग से बचाव एवं योग के संबंध में जानकारी देते हुए नियमित योग करने पर जोर दिया। मंत्री पदम चंद खटोड़ ने संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी। अध्यक्ष घेवर चंद श्रीश्रीमाल ने स्वागत किया, जबकि कोषाध्यक्ष राजेंद्र चोरड़िया ने आभार व्यक्त किया। डॉ. महेंद्र जैन ने मरीजों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की। राजेंद्र श्रीश्रीमाल, सिंगापुर ने नियमित दवा लेने एवं चिकित्सकीय सावधानियों का पालन करने की अपील की। शिविर में मूलचंद नाबेड़ा, मदनलाल लोढ़ा, मदनलाल रांका, सुशील चौधरी, सुरेश लोढ़ा, दिनेश जोशी, दिलीप पाराशर, ज्ञान बाबेल, राजेंद्र जायसवाल सहित अनेक सदस्यों ने सेवाएं दीं। मरीजों एवं परिजनों के लिए पूरे माह आयोजित 5 शिविरों में निशुल्क भोजन की व्यवस्था स्वर्गीय सत्यदेवी पाराशर की पुण्य स्मृति में श्यामसुंदर, संजय कुमार, सतीश कुमार एवं संदीप कुमार पाराशर, श्याम मिष्ठान भंडार, गुलाबपुरा के सौजन्य से की गई। इससे 160 से अधिक लोग लाभान्वित हुए। शिविर का संचालन पदम चंद जैन खटोड़ ने किया।

दशलक्षण पर्व के सातवें दिन जिनालयों में मनाया धूप दशमी पर्व

ब्यावर. शाबाश इंडिया

दशलक्षण पर्व के सातवें दिन नगर के जिनालयों में उत्तम संयम धर्म की आराधना के साथ धूप दशमी (सुगंध दशमी) पर्व श्रद्धा एवं उत्साह से मनाया गया। प्रातः विभिन्न मंदिरों में ध्वजा फहराई गई तथा अभिषेक, पूजन एवं धार्मिक विधान हुए। धूप अर्पित करने के लिए मंदिरों में श्रद्धालुओं की भीड़ रही और सुगंध से जिनालयों का वातावरण भक्तिमय हो गया। दिगंबर जैन पंचायती नसिया में आयोजित धर्मसभा में प्राचार्य अरुण कुमार जैन शास्त्री ने कहा कि मन और इंद्रियों को नियंत्रित रखते हुए जीवन को पवित्र, स्वस्थ, व्यवस्थित एवं संतुलित बनाना ही संयम है। इंद्रियों को विषय भोगों से हटाकर परमात्मा की आराधना में लगाना आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि इंद्रिय विषयों से मिलने वाला सुख क्षणिक है और आसक्ति व्यक्ति को दुख की ओर ले जाती है। इसलिए इंद्रियरूपी घोड़ों पर संयम की लगाम लगाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जो मन पर विजय प्राप्त कर लेता है, वही वास्तविक अर्थों में स्वयं पर विजय प्राप्त करता है। जैन दर्शन में स्थावर एवं त्रस जीवों की विराधना से बचना भी संयम का महत्वपूर्ण अंग है।

धूप दशमी पर उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

भाद्रपद शुक्ल दशमी को मनाए जाने वाले सुगंध दशमी अथवा धूप दशमी पर्व पर श्रद्धालुओं ने जिनेंद्र प्रभु के समक्ष सुगंधित धूप अर्पित कर धर्मलाभ लिया। दिगंबर जैन समाज के प्रवक्ता राकेश जैन ने बताया कि उत्तम संयम धर्म इंद्रियों एवं इच्छाओं पर नियंत्रण रखते हुए जीवन को धर्म, साधना एवं आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। दिगंबर जैन पंचायत के अध्यक्ष सुशील बड़जात्या एवं मंत्री रितेश फागीवाला ने बताया कि दशलक्षण पर्व के तहत नगर के जिनालयों में प्रतिदिन धार्मिक आयोजन हो रहे हैं। पंचायती नसिया में रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सायंकाल आरती एवं प्रवचन के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए, जिसमें समाजबंधुओं ने सहभागिता की।

उत्तम संयम धर्म की पूजा-अर्चना

जयपुर. शाबाश इंडिया। दुर्गापुरा जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व के तहत उत्तम संयम धर्म के विधान एवं पूजन का आयोजन श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ किया गया। इस अवसर पर उत्तम संयम धर्म के सौधर्म इंद्र डॉ. एम.एल. जैन 'मणि' एवं डॉ. शांति जैन 'मणि' रहे। प्रातः 7 बजे अभिषेक एवं शांतिधारा के साथ धार्मिक कार्यक्रमों का शुभारंभ हुआ। डॉ. दंपती को मुकुट एवं माला पहनाकर भगवान आदिनाथ के प्रथम अभिषेक एवं शांतिधारा का पुण्यार्जक बनाया गया। इस अवसर पर उनके सुपुत्र डॉ. मनीष मणि एवं डॉ. अलका जैन तथा पौत्र डॉ. श्रेय जैन ने सहयोग किया। मणि परिवार ने धार्मिक क्रियाएं संपन्न कीं। इसके बाद नित्य नियम की पूजाओं के पश्चात उत्तम संयम धर्म विधान की पूजा की गई। मणि परिवार ने 22 अर्घ्य मंडल पर पं. दीपक शास्त्रीजी के निर्देशन में एवं महेशजी की मधुर वाणी में संगीतमय विधि से अर्घ्य अर्पित किए। पूजा के दौरान श्रद्धालुओं ने भक्ति गीतों पर नृत्य कर वातावरण को धर्ममय बना दिया। कार्यक्रम में मंदिर अध्यक्ष चांदवाड़जी, मंत्री कालाजी एवं कोषाध्यक्ष गंगवाल साहब का विशेष सहयोग रहा।

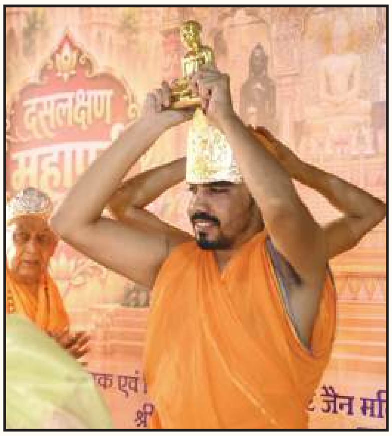

धूप दशमी पर भगवान महावीर जन्मोत्सव की सजीव झांकी सजाई

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री 1008 श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन पल्लीवाल मंदिर में धूप दशमी के शुभ अवसर पर शक्ति नगर महिला मंडल की ओर से ''भगवान महावीर जन्मोत्सव'' विषय पर सजीव झांकी सजाई गई। झांकी में भगवान महावीर के जन्मोत्सव से जुड़े प्रसंगों को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया। झांकी इतनी जीवंत एवं मनोहारी रही कि श्रद्धालुओं की नजरें उससे हटाए नहीं हट रही थीं। महिला मंडल की सभी सदस्यों ने झांकी को सफल बनाने के लिए उत्साहपूर्वक मेहनत की। मंदिर में दर्शन के लिए पहुंचे श्रद्धालुओं ने झांकी का अवलोकन किया और इसकी सराहना करते हुए आयोजकों की प्रशंसा की। झांकी ने श्रद्धालुओं को भगवान महावीर के जीवन एवं उनके संदेशों से जुड़ने का अवसर प्रदान किया।

तीये की बैठक

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि हमारे पूजनीय

श्रीमान भागचन्द साह "अत्तार"

का आकस्मिक स्वर्गवास दिनांक 21.09.2026 को हो गया है। तीये की बैठक 23.09.2026 को प्रातः 11 बजे भट्टारक जी की नसियां, तोतूका भवन में होगी। तत्पश्चात् घडियों का दस्तूर होगा।

शोकाकुल: महावीर-मंजू, मनोज-मीतू (पुत्र-पुत्रवधु), संदीप- शिखा (भतीजा-वधु), प्रतीक-मनाली, नीतीश-रितिका, डॉ ऋषभ, खुश (पौत्र-पौत्रवधू), सीमा-संजय जी सेठी (पुत्री-दामाद), मैना देवी पाटनी, डॉ. शांति-डॉ. मोहन लाल जी जैन ''मणि'', प्रकाश जी बाकलीवाल (बहन-बहनोई), खुशबू-निकेत जी, निहारिका- कुणाल जी (पौत्री-दामाद), सिद्धार्थ-कनिका (दोहिता- दोहितावधु), सुरभि-लक्ष्य जी (दोहिती-दामाद), नव्या, पार्थ, मेहान (पड़पौत्र-पड़पौत्री), संस्कृति, सान्वी, रिहांश (पड़दोहिता, पड़दोहिती)। पता: 122, हिम्मत नगर, टोंक रोड़, जयपुर।

ससुराल पक्ष- सतीश जी, तेजप्रकाश जी, धीरेन्द्र जी, शैलेन्द्र जी (दैनिक समाचार जगत) एवं समस्त गोधा परिवार लदाना वाले।

फर्म: भागजी शरबत, महावीर यात्रा कम्पनी, ऋषभ कैंसर केयर

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

हमारे आदरणीय

श्रीमान भागचन्द साह "अत्तार"

के आकस्मिक स्वर्गवास पर हम सभी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

::श्रद्धावनत्::

दीनदयाल जैन, रवि स्वाति, मनीष - स्मिता (पुत्र-पुत्रवधू), परिधि- मोहित जी जैन (पौत्री-दामाद), कृति, भूमिका, धृति, संयम (पौत्र-पौत्री) एवं समस्त पाटनी परिवार, खानियाँ वाले निवास: बी-51, सेठी कॉलोनी, जयपुर

श्रीमती निर्मला देवी पाटनी फाउन्डेशन